वर्ष १] सस्ती-साहित्य-माला [पुस्तक ५

व्यावहारिक सभ्यता

लेखक
गणेशदत्त शर्मा गौड़ "इन्द्र"
आगर (मालवा) निवासी

प्रकाशक
सस्ता-साहित्य-प्रकाशक मंडल
अजमेर

तीसरी बार १५०० | मार्च १९२८ कुल संख्या ६५०० | मूल्य ।)॥

विषय-सूची

लागत का ब्योरा

कागज	७८)
छपाई	१३४)
बाइंडिंग	१२)
लिखाई, व्यवस्था, विज्ञापन आदि खर्च ...	१०६)
	३३०)

कुल प्रतियाँ १५००

एक प्रति का लागत मूल्य =)॥

पुस्तकें खरीदने का सुअवसर

कई पुस्तके आधी कीमत मे, कई पौनी कीमत मे

हमारे यहाँ दूसरे प्रकाशको की सैकडो तरह की भिन्न-भिन्न विषयो की पुस्तकें मौजूद है। इस पुस्तक-भंडार को हम उठा देना चाहते हैं। अतएव जो भाई पुस्तके खरीदना चाहे, वे हमसे पत्र-व्यवहार करे।

पता—सस्ता-साहित्य-मंडल, अजमेर

मुख-बन्ध

ऋग्वेद में लिखा है कि—

"इला सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयो-भुवः। वर्हि सीदंत्व स्रिधः॥"

अर्थात्—(इला) मातृभाषा (सरस्वती) मातृसभ्यता और (मही) मातृभूमि (तिस्र देवीः) ये तीनो देवियाँ (मयोभुवः) कल्याण करने वाली हैं। इसलिए तीनो देवियाँ (वर्हि) अन्तःकरण मे (अ-स्रिध) बिना भूले हुए (सीदन्तु) स्थित हों।

तात्पर्य्य यह कि मातृभाषा, मातृसभ्यता और मातृभूमि से प्रत्येक मनुष्य का अगाध प्रेम होना चाहिए। यह वेद-वचन हमें मातृ-सभ्यता को सदा ध्यान में रखते हुए कार्य्य करने की आज्ञा देता है, यह "मातृसभ्यता" शब्द यहाँ बहुत विचार करने योग्य है। क्योंकि वेद का उपदेश किसी देशविशेष के लिए नहीं है बल्कि सारे संसार के लिए है। इसी लिए वेद ने सभ्यता के साथ मातृ-शब्द लगा कर उसे सीमाबद्ध कर दिया है। इसे हम चाहें तो "देशी-सभ्यता" कह सकते हैं। इससे स्पष्ट है कि प्रत्येक देश की सभ्यता अलग अलग है और जो जिस देश का रहनेवाला है उसे अपने देश की सभ्यतानुसार अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए। यह वेद के उक्त उपदेश का अर्थ है। महात्मा गान्धी ने भी इस वेद वाक्य के अनुसार ही इन्दौर नगर में दिये हुए चैत्र कृष्ण ३ सं० १९७४ वै० के अपने व्याख्यान में कहा था :—

"मै आप लोगो को यह कहने आया हूँ कि आप अपनी सभ्यता पर विश्वास करें और उस पर दृढ़ रहे, ऐसा करने से हिन्दुस्थान सारे संसार पर साम्राज्य कर लेगा । हम ऐसे देश के रहनेवाले है जो अभी तक उसीकी सभ्यता पर निर्भर रह सका है । . यूरोप की सभ्यता आसुरी है । अगर हमें यूरोप की सभ्यता का अनुकरण करेगे तो हमारा नाश हो जायगा। मै इन सूर्यनारायण से (जो उदय हो रहे हैं) प्रार्थना करता हूँ कि भारत अपनी सभ्यता न छोड़े। .कृपा कर प्राचीन सभ्यता मत भूल जाइए ।" इ०

हमारा राष्ट्र-सूत्रधार महात्मा गांधी हमे उक्त वचनो द्वारा अपनी प्राचीन सभ्यता पर अटल रहने की आज्ञा देते है । सृष्टि के आरम्भ मे उत्पन्न वेद जो कह रहे हैं वही बात वर्त्तमान काल मे महात्मा गांधी भी हमें कह रहे हैं । अर्थात् अत्यन्य प्राचीन और अत्यन्य नवीन दोनों बाते एक सी ही है ।

कई लोगो का अन्दाज है कि जिस प्रकार विदेशो में परिवर्तन होगा उसी प्रकार चलने से हमारा कल्याण होगा, किन्तु यह भ्रम है । भारतेतर देश इन दिनो अपने उन्नति के पथ पर अग्रसर हुए हैं, अतएव वहाँ जितने परिवर्त्तन न हो, वे ही थोडे है, किन्तु हमारा भारत आज से हजारो वर्ष पूर्व अपने देश की जलवायु के अनुसार उन्नति को पराकाष्ठा कर चुका है । यह काल तो हमारे पतन का है । इसलिए हमे अपनी प्राचीन सभ्यता को ढूँढ़ कर तदनुसार आचरण करना चाहिए । हम लोग विदेशीय सत्ता मे वर्षों से है, इसलिए हमने अपनी सभ्यता को भुला कर उन्हीकी सभ्यता को अपना लिया है, यह ठीक नहीं है ।

हमारा देश एक ऐसा देश है जो अपनी सभ्यता द्वारा ही उन्नति कर सकेगा। अन्य देशो के अनुकरण से हम सभ्य बनने के बजाय असभ्य हो जावेंगे। यूरोप की कई सभ्यताएँ नष्ट हो गई और हो जावेंगी किन्तु हमारे देश की सभ्यता ज्यों की त्यो इम पतन के समय मे भी जीवित है। सब विद्वान् एक स्वर से इस बात को स्वीकार करते हैं कि "भारतवर्ष की जो सभ्यता आज से हजारों वर्ष पहले थी, वही आज भी है।"

हमारी सभ्यता हमारे ऋषि, मुनियो की घोर तपश्चर्या का सार है। फिर भला वह कैसे नष्ट हो सकती है—और किस प्रकार अनुपयोगी साबित की जा सकती है? परन्तु एक बात और है। हमें अपनी दृष्टि को एकदम सकुचित भी नहीं कर लेना चाहिए। जहाँ जहाँ भी कही हमे अच्छी बाते दिखाई दे उन्हे हम ग्रहण करें। यही सभ्यता का सबसे पहला और आवश्यक गुण है।

यजुर्वेद कहता है कि—

"भद्र कर्णेभि शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ँ् सस्तनूभिर्व्यशेम हि देवहितं यदायु.।" य० अ० २५ मं० २१

अर्थात् कानो से अच्छी बातें सुनें, आँखो से सदा शुभ पदार्थों को ही देखे और अङ्ग उपाङ्गो द्वारा सदा शुभ कार्यों को करते रहे। मतलब यह कि हमारे शरीर का रोम-रोम सदा कल्याण पथ का ही अनुगामी हो। यह हमारी प्राचीन सभ्यता की पराकाष्ठा है।

यह सब कुछ है, किन्तु अभी तक इस विषय पर, मेरे विचार से संस्कृत भाषा को छोड कर किसी अन्य देशी भाषा मे एक भी पुस्तक नहीं है। इसी आवश्यकता को कुछ अशो मे पूर्ण करने के

लिए यह छोटा सा प्रयास है। पुस्तक खास कर बालको को ध्यान मे रख कर ही लिखी गई है।

एक बात यहाँ और कह देना उचित है—लोगो का प्राय यह खयाल है कि "जो आदत या स्वभाव पड़ गया उसका छूटना असंभव है इत्यादि।" यह विचार गलत है। आदत को छोड़ना असंभव नहीं, कष्ट-साध्य अवश्य है। इसलिए जरा विचार के साथ काम किया जावे तो सैकडो बुरी आदते छूट जावेगी। एक दो बार की असफलता से निराश नही हो जाना चाहिए। बल्कि ऐसे समय इस वाक्य को याद रखना चाहिए —

"योजनानां सहस्रतु शनैः गच्छेत् पिपीलिका।"

अर्थात्—अत्यन्त छोटा जीव चींटी भी अगर निरन्तर चलती रहे तो हजारों कोस चली जाती है। फिर भला हम तो मनुष्य हैं, हम क्या नही कर सकते ? इस मंत्र का अर्थ सहित जाप करते ही आपके शरीर मे स्फूर्ति आ जावेगी और एक दिन बडे मे बडे काम को भी कर डालने का आपमे पुरुषार्थ आ जावेगा। इसलिए हिम्मत न हारिए और वर्षों के दोषो को पुरुषार्थ द्वारा नष्ट कर दीजिए। यह तो है ही नही कि आप मे असंख्य असभ्यताएँ भरी हुई है या आप असभ्यता के भडार हैं। यदि कुछ दोष हो भी तो उन्हे हटा देना एक पुरुषार्थी मनुष्य के लिए कोई बडी बात नही है।

आगर (मालवा)
वर्ष का प्रथम दिन
सं० १९७९ वि०

विनीत
गणेशदत्त शर्मा गौड़
('इन्द्र')

व्यावहारिक सभ्यता

धार्मिक व्यवहार

(१)

परमात्मा के स्मरण से मन पवित्र होता है। जहाँ मन की पवित्रता है, वहाँ ज्ञान का प्रकाश होता है। जहाँ ज्ञान का प्रकाश है, वहाँ अज्ञानान्धकार नहीं रह सकता। अतएव अज्ञान रूपी अन्धकार (असभ्यता) को हटाने के लिए उस परम पिता परमात्मा का रात दिन स्मरण करो। जिसके पवित्र मन मे वह देवाधिदेव निवास करेगा, वहाँ असभ्यता का रहना कठिन है।

(२)

ईश्वर-चिन्तन ऐसी जगह बैठकर करना चहिए, जहाँ कोई आता जाता न हो, अर्थात् बिलकुल एकान्त हो। बहुत से लोग नदी, तालाब और कुएँ के घाट पर सन्ध्योपासनादि करने लगते हैं। बहुत से मनुष्य ऐसे मन्दिरो मे, जहाँ लोग प्राय' आते जाते रहते हैं, बक-ध्यान लगाये बैठे रहते है—यह ठीक नही। ऐसे लोग यदि सच्चे मन से ईश्वरोपासना करे तो भी लोग उन्हे ढोंगी कहने लगते हैं। सच्चे ईश्वर-भक्त प्राय एकान्त ही मे भजन पूजन करते हैं। भीड और हुल्लड़बाजी मे ईश्वरोपासना हो ही नहीं सकती अतएव वे लोग असभ्य हैं जो ऐसे स्थानो पर बैठकर भक्ति का स्वांग बनाते हैं।

(३)

छींक, जँभाई, और डकार के अन्त मे "ओ३म्" शब्द का उच्चारण करना चाहिए। बहुत से लोग इनके बाद एक कर्कश, कर्णकटु तथा निरर्थक शब्द करते है यह असभ्यता है।

(४)

जब कोई मनुष्य ईश्वरोपासना के समय ध्यानावस्थित हो तो उससे अथवा दूसरे मनुष्यो से बातचीत नही करनी चाहिए। और न किसी तरह का ऐसा कोई कार्य ही करना चाहिए जिससे कि उपासना मे विघ्न हो।

(५)

बहुत से महाशय ईश्वर-स्मरण के समय बोलते रहते हैं, यहाँ वहाँ चञ्चल दृष्टि से देखते रहते हैं, जो बोलते नहीं वे सकेतो द्वारा बातचीत करते रहते है, यह अनुचित है। इस प्रकार की ईश्वरोपासना को समझदार लोग अच्छी नजर से नही देखते अत-एव भगवद्भजन के समय बिलकुल शान्त रहना चाहिए।

(६)

अपना धार्मिक चिन्ह समझकर या आयुर्वेदानुसार लाभदायक समझकर माथे पर तिलक—गन्धादि लेपन करो। किंतु अपने मुख को खूबसूरत बनाने के लिए तिलक मे ड्राइंग (चित्रकारी फूल पत्ते या आडी—टेढ़ी रेखाएँ) करना छिछोरपन है। बहुत से लोग माथे पर चन्दन लेप कर उसमे कघे से अथवा सीक से आडी टेढ़ी लकीरे बनाकर अपने मुहँ को खूबसूरत बनाते हैं। कई महा-शय तो लाल पीले काले इत्यादि रग भी काम मे लाते हैं, यह बेहूदापन है, धर्म की दिल्लगी है, ठगाई है।

(७)

चोरी मत करो। यह महान निंद्य कार्य है। इसके बराबर बुरा काम नही है। इसका फल भी बड़ा ही बुरा होता है। दुनिया मे कोई भी चोरो का आदर-सम्मान नही करता।

(८)

आज कल भिखमंगे बहुत हो गये हैं। ब्राह्मणो ने तो इसे अपना पेशा ही बना लिया है। पर भीख के असली मानी क्या है यह आप जानते हैं? श्री विनोबाजी भीख की यो व्याख्या करते है —'अधिक से अधिक योग्यता प्राप्त कर समाज की अधिक से अधिक सेवा करना और निर्वाह मात्र के लिए कम से कम लेने के मानी भीख है। पहले के ब्राह्मण ऐसी भीख मांगते थे। आज भी ऐसे ही लोग भीख मांगने के पात्र है। उन्ही को वह दी भी जाय। और दी जाय लंगड़ो लूलो अपाहिजो को। औरो को नहीं! इसके अतिरिक्त जो लोग भीख मांगते है वे समाज के चोर हैं।

(९)

यदि भीख से ही अपना उदर-पोषण करना चाहते हो तो पहले तन मन से प्राणीमात्र का शुभचिंतम करते हुए अपना जीवन सामूहिक सेवा मे लगा दो। भीख माँग कर खाना और परोपकार से जी चुराना कृतघ्न पुरुषो का काम है। क्योंकि जो कुछ भी लोग तुम्हे देते है वह इसी इच्छा से कि ये हमारे शुभचिंतक सेवक हैं, वर्ना तुम्हारे पुरखाओ का उन्हे कर्जा नहीं देना है, जो तुम्हे दे।

(१०)

पागल, बेहोश तथा कोढ़ी मनुष्य को मत छेड़ो। क्योंकि ये

स्वयम् दुखी होते है। दुखी को दुःख देना नीच आदमी का काम है।

(११)

धार्मिक तथा अन्य इसी प्रकार की बातचीत करते समय जरा ज़रा सी बात पर क्रोध न करो और न जोर जोर से बोलने ही लगो। क्योंकि धर्म असहिष्णुता का विरोधी है। सभ्य वही है, जो ऐसे समय मे धैर्य पूर्वक बात चीत करे।

(१२)

उन मनुष्यो से घृणा मत करो जो दूसरे धर्मों के अनुयायी है। बल्कि उनकी बात को ध्यानपूर्वक सुनो। ऐसा कोई धर्म नहीं जिसमे सभी बाते अच्छी हो या सभी बुरी हो। धर्म की प्रतिष्ठा उसके माननेवालो से बढ़ती या घटती है। आंखे खोल कर, हर एक बात को समझ कर, उसका पालन करो। अपने धर्म का खूब अध्ययन करो। इससे तुम्हारे दिल मे स्वधर्म के प्रति श्रद्धा और अटल विश्वास होगा और दूसरे धर्मों के प्रति आदर बढ़ेगा।

(१३)

ब्राह्मण–धर्म तलवार की धार के समान है। ब्राह्मण, समाज का सब से अधिक विनम्र, निस्वार्थी और ज्ञानवान सेवक है। अपनी पूजा से वह दूर भागता है। वह शिक्षा मांगता नही, वह उसे अपने आप मिलती है। उसकी पूजा करने के लिए समाज उसके पीछे पीछे दौड़ता है। ब्राह्मण-धर्म का आदर्श यह है। ब्राह्मण बालक परमात्मा को धन्यवाद दे कि वे ऐसे ऊंचे सेवको के कुल मे पैदा हुए है। वे अपने को सच्चे ब्राह्मण बनावे।

(१४)

क्षत्रिय, समाज की रक्षा करने वाला सिपाही है। देश की

सम्पत्ति को बढ़ाने वाला वर्ग ही सच्चा वैश्य है। सेवा शूद्र का धर्म है। प्रत्येक समाज की उन्नति के लिए ये चारों वर्ण-धर्म आवश्यक हैं। प्रत्येक परिवार और व्यक्ति के जीवन में भी इनके लिए उचित स्थान है।

(१५)

कोई व्यक्ति अपने आप को केवल ब्राह्मण, केवल क्षत्रिय, केवल वैश्य या केवल शूद्र न समझे। किसी कुल-विशेष में जन्म होने से उस वर्ण का धर्म उसका प्रधान धर्म है। पर उसमें होने चाहिए ये सभी धर्म।

(१६)

जो ब्राह्मणों की तरह ज्ञानार्जन नहीं करता, क्षत्रिय के समान अवसर पर धर्म, समाज, परिवार, स्त्रियों एवं बालकों की रक्षा नहीं करता, वैश्यों के समान देश के फायदे को पहले ध्यान में रख कर धन-अर्जन नहीं करता और हर वक्त शूद्र की तरह देश की तथा पूजनीयों की सेवा के लिए दौड़ नहीं पड़ता, वह अनार्य है—असभ्य है। वह देश और परिवार की बात तो दूर है, अपना कल्याण भी नहीं कर सकता।

(१७)

साधु पुरुषों का निरादर मत करो—क्योंकि उन्हीं के पुण्य से यह संसार चल रहा है। जब किसी ऐसे पुरुष के प्रति तुम्हारे दिल में ईर्ष्या अथवा अनादर उत्पन्न हो तो समझ लो कि तुम्हारे अन्दर कोई दोष उत्पन्न हो गया है।

(१८)

विद्वत्ता और साधुता हमेशा एक स्थान में निवास नहीं करते।

बहुत सी किताबो मे लिखी सामग्री रटने या दिमाग मे ठासने भर से कोई साधु नहीं हो जाता। विद्वत्ता दिमाग है, साधुता दिमाग और हृदय का भी और खासकर हृदय का पूर्ण विकास है।

(१९)

महज गेरुए वस्त्र पहनने भर से कोई साधु नहीं हो जाता। यह तो एक लिवास है जिसे साधुओ ने एक समय ग्रहण किया था। आजकल गेरुए वस्त्र पहनने वाले सभी साधु नहीं है। और न सफेद वस्त्र पहनने वाले सभी अ-साधु ही है। अब समय पलट गया है। केवल लिवास देखने से किसीका आदर-निरादर न करो।

(२०)

गाव मे या शहर मे कुछ मदिर या पूजा-स्थान होने पर और अधिक बनाना लाभदायक नहीं है। यदि ऐसे कामो मे हमे धन लगाना है तो प्राचीन स्थानो की ही मरम्मत कर देना चाहिए।

(२१)

लोग प्राय अपना नाम करने के लोभ मे आकर नवीन मदिर बनाते है। यह दम्भ है। इससे समाज मे न तो भक्ति बढ़ती न उस दानी को मुक्ति मिलती। उनकी मृत्यु के बाद वह मदिर अपूज्य हो जाता है। कुत्ते या अन्य धर्म के अश्रद्धालु लोग जा कर उसे भ्रष्ट करते है। और तब हम चिल्लाते है कि मदिर भ्रष्ट हो गया।

(२२)

धर्म, मंदिरो और मस्जिदों मे नहीं निवास करता। वह तो हृदय की चीज है। जहां पवित्र हृदय है वहीं धर्म का निवास है।

(२३)

वृद्ध, अंगहीन, स्त्री, और कोढ आदि भयंकर रोगग्रस्त भिक्षुओं को अपने घर के द्वार पर भिक्षार्थी आया देख कर मत झिड़को, बल्कि नम्र वचनों से उसके चित्त को प्रसन्नता देते हुए यथा शक्ति सहायता दो।

(२४)

सूने मन्दिरों की प्रतिमाओं पर, कबरों पर तथा धार्मिक चिह्नों पर थूकना, पेशाब करना या अन्य किसी प्रकार से अपमान करना जंगलीपन है।

(२५)

भारतीय आर्य-सभ्यता सिखाने के लिए हमारे देश में पहिले से ही सोलह संस्कार प्रचलित हैं। इन्हें सभ्यता की सोलह चाबियाँ कह सकते हैं। जब से देश में इनके अश्रद्धा हुई तभी से भारत असभ्यता के गहरे गर्त में गिर गया। अतएव जिन्हें अपनी गँवाई हुई प्राचीन सभ्यता प्राप्त करना है, उन्हें संस्कारों से प्रेम करना चाहिए। अभी तक जिन संस्कारों का समय गुजर चुका, उन्हें जाने दो; किन्तु अब जो हो सकते हों उन्हें तो अवश्य ही करो।

(२६)

आप यदि किसी प्रतिमा, चित्र या धर्म-ग्रन्थादि के माननेवाले नहीं हैं तो उसका अपमान भी न करें। जब कि आप उसे कुछ भी नहीं समझते तो अपमान किस का ? यदि अपमान किया तो यह सिद्ध हो जावेगा कि आप उसे कुछ न कुछ अवश्य मानते हैं। ऐसे व्यक्ति समाज में उद्दण्ड और उच्छृंखल कहे जाते हैं। शिवा-जी ने भी लूट में मिले हुए शत्रुओं के कुरान आदि धार्मिक पुस्तकों

की मानरक्षा की थी। यही भारतीय सभ्यता का उच्च उदाहरण है।

(२७)

सूर्योदय के बाद तक मत सोते रहो। हमारे पूर्वजो ने सूर्योदय के बाद सोने वालो के लिए, देखिये कैसा अच्छा दण्ड-विधान किया है। मनुजी कहते हैं कि—

"तं चेदभ्युदयात्सूर्यं शयानं काम चारतः।
निम्लोचेद्वाप्य विज्ञानाज्जपन्नुवसेद्दिनम्॥"

(२८)

यदि इच्छापूर्वक सोते हुए सूर्य उदय हो जावे तो गायत्री को जपता हुआ दिन भर व्रत करे।

(२९)

मल मूत्र त्यागने के समय यज्ञोपवीत कान पर लपेट लेना चाहिए और फिर विना हाथ शुद्ध किये उसे नही छूना चाहिए।

(३०)

भारतीय आर्य सभ्यता प्रत्येक ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को जनेऊ पहिनने के लिए बडे जोर के साथ आज्ञा देती है, अतएव उक्त तीनो वर्णो को यज्ञोपवीत अवश्य ही पहनना चाहिए। द्विजो का जनेऊ न पहिनना असभ्यता है।

(३१)

परन्तु केवल जनेऊ धारण कर लेना ही पर्याप्त नही है। तदनुसार पवित्रतापूर्वक रहना भी चाहिए।

(३२)

चित्त को पवित्र रखने का सब से उत्तम साधन सत्य और प्रार्थना है। मनुष्य हमेशा सत्य बोले और दिन मे कम से कम

एक वार जरूर प्रार्थना कर ले। सन्ध्या, नमाज़ प्रार्थना ही है।

(३३)

सभ्यता और असभ्यता का विचारो से वड़ा भारी सम्बन्ध है। विचारो का पिता मन है अतएव मन को सदा अच्छे विचारो से युक्त रखना चाहिए।

"मे मन. शिवसंकल्पमस्तु।"

(३४)

वेद संसार के समस्त ग्रंथो मे सर्वमान्य है। वैदिक सभ्यता इस पृथ्वी पर अपना सिक्का जमा चुकी है, इसलिए जिसे सभ्यता के उन्नतम शिखर पर पहुँचना है उसे चाहिए कि वह वेद का स्वाध्याय करे।

(३५)

सदा सर्वदा मन मे शुभ विचार, शुभ उच्चार और शुभ आचार को धारण करो। ये तीन वाते ही केवल ऐसी है जो मनुष्य को सभ्य वना देती हैं।

(३६)

अशिव, अशुभ और अभद्र विचारों को मन से निकाल डालिए। ये ही मनुष्य को असभ्य वनाते है।

(३७)

क्रोध करना, धार्मिक एवम् सामाजिक दृष्टि से अत्यत वुरा है। इसके वेग मे मनुष्य को भले वुरे का धर्माधर्म का कुछ भी ज्ञान नहीं रहता। इसलिए क्रोध करना अच्छा नहीं है।

(३८)

पवित्रता से और सभ्यता से घनिष्ट सम्बन्ध है। जो पवित्र

होते है वे अवश्य ही सभ्य होते है और असभ्य अवश्य ही अपवित्र होते है। पवित्रता बाहिरी और अन्दरूनी अर्थात् मन की दोनों ही आवश्यक है।

(३९)

इन्द्रिय-निग्रह करने वाला मनुष्य जनसमाज मे श्रेष्ठ एवम आदरणीय माना जाता है। इन्द्रिय-लोलुप व्यक्ति नीच और पतित गिना जाता है, इसलिए इन्द्रिय-निग्रह अवश्य करना चाहिए।

(४०)

हाथ मे माला लिए जपते फिरना ठीक नही है।

(४१)

हे परम-पिता परमात्मा! हम सब लोग मुँह से अच्छे शब्द बोले, कानो से अच्छे शब्द सुने, आँखो से अच्छे पदार्थ ही देखे, और शरीर से अच्छे कर्म करे। यही अंतिम प्रार्थना है।

व्यक्ति मे शान्ति! राष्ट्र में शान्ति!! जगत् मे शान्ति!!!
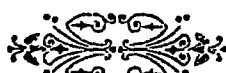
नैतिक व्यवहार

(१)

ऐसे स्थान मे, जिसके चारो ओर दीवार या अन्य किसी प्रकार की आड़ हो जैसे बागड या तारो का फेन्सिङ्ग (Fencing), रास्ता छोड कर, अन्य मार्ग से मत घुसो। नीति भी यही कहती है—

"अद्वारेण च नातीयादग्रामं वा वेश्मसमावृतम् ॥"

(२)

सडको पर, जहाँ कि लोग चलते फिरते हो, बडे बड़े जोर से कहकहा मारकर मत हँसो। ऐसी बेहूदी हँसी पर लोग हँसने वाले को बेहूदा समझते हैं और उसकी हँसी मजाक करते हैं।

(३)

कई महाशय प्रेम के कारण अबोध बालको का मुख चूमकर अपने प्रेम का परिचय देते हैं, यह बिलकुल अनुचित है। भारतीय सभ्यता केवल मस्तक सूंघने की आज्ञा देती है। चूमाचाटी पाश्चात्य सभ्यता है। बकौल अकबर के कि "मगरिबी तहज़ीब में बोसा तलक है मुआफ।"

(४)

रेल, तारघर, डाकघर, नाटकघर, सीनेमा, सभा, पुस्तकालय, कारखाने आदि सार्वजनिक स्थानो पर लगाए हुए नोटिसो मे लिखी हुई सूचनाओ का उल्लंघन कदापि मत करो।

(५)

जिस स्थान मे प्रवेश करने की मनाही के लिए कहीं कुछ

लिखा हुआ हो या अन्य कोई संकेत हो जैसे "No Admission" "अन्दर जाने की इजाजत नहीं है" तथा लाल रङ्ग का लालटेन वगैर जलाया गया हो तो उसकी अवहेला करके अन्दर नहीं घुसना चाहिए।

(६)

किसी समाज या संस्था मे शामिल होने से पहले उसके नियमो को अच्छी तरह पढ़ लो और पढ़ने के बाद उन नियमों का पालन करो।

(७)

ऐसी भीड़ मे जिसे कोई दबा रहा हो या हटा रहा हो, उसमे फिर उसी ओर जिधर से कि हटाये गये हो जाना बेहूदगी है।

(८)

कुँए आदि जलाशयो पर जूते पहने हुए नहीं जाना चाहिए और खास कर पनघट का तो बहुत ही ध्यान रखना चाहिए। ऐसे स्थानों पर कोई ऐसा काम न करो जिसमे वह स्थान गंदा हो या औरो को असुविधा हो।

(९)

एक बार अपने मुँह से चलने के लिए कहकर फिर वहाँ ठहरकर बाते न करने लगो, वहाँ मत ठहरो बल्कि चले ही जाओ।

(१०)

पवित्र स्थानो मे जैसे मन्दिर, मस्जिद वगैर में जूते पहने नहीं जाना चाहिए, भले ही आप उस स्थान की इज्जत न करते हो। यावनी सभ्यता रोजे मकबरे और मस्जिदो मे जूते पहिने हुए जाने से मना करती है। हाँ हाथो मे जूतियाँ उठाकर जा सकते हो।

(११)

रेल मे या ऐसी सवारी अथवा स्थानो मे जहाँ पैसे देकर जाने आने का नियम बना हो, वहाँ बिना पैसे दिये अथवा बिना टिकट प्राप्त किये मत जाओ।

(१२)

अपने पास जिस दर्जे का टिकट हो या जिस दर्जे के दाम दिये हो उससे ऊँचे दर्जे के स्थान मे बैठने की कोशिश मत करो। बिना किसी आवश्यक कारण के अथवा अधिकारी की बिना आज्ञा पाये ऐसा करना चोरी और धोखे की हद तक पहुँचाता है।

(१३)

किसी पाठशाला मे जा कर पढ़ानेवाले से अकारण ही बहुत देर तक बातचीत न करो। जहाँ तक बन सके किसी साधारण काम के लिए भी स्कूल मे न जाओ। आप अपनी बात को पत्र द्वारा भी अध्यापक महाशय को सूचित कर सकते है।

(१४)

तालाबो, नदियो, कुओ, बावड़ियो और ऐसे ही अन्यान्य जलाशयो मे पत्थर या मिट्टी मत फेको।

(१५)

किसी की वस्तु खो जाने पर या गिर जाने पर यदि आपको मिल जावे तो आप उसके मालिक को उसे लौटा दो। यदि मालिक का पता न हो तो उसे अपने पास मत रक्खो बल्कि ऐसी सस्था या सरकारी विभाग मे दे दो जो वहाँ तक उसे पहुँचा सके। जैसे सेवासमिति या पुलिस।

(१६)

यदि आप किसी के मकान मे घुस गये हो और अन्दर जाने पर मालूम हो कि वह सूना है तो, फिर उसमे से चुपचाप मत निकल जाओ बल्कि वहाँ पर किसी मनुष्य के आने तक ठहरे रहो। या ऐसा कोई शब्द कर दो जिससे आपका उस मकान के अन्दर होना लोगो को मालूम हो सके।

(१७)

किसी के मकान मे घुसने के पूर्व, अन्दर आने की इजाजत माँगो। बाद मे प्रवेश करो। अधाधुध घुसते चले जाना ठीक नहीं।

किसी के घर मे यदि किसी दरवाजे पर पर्दा वगैर लटक रहा हो तो उसी की ओर बारंबार अथवा घूर घूरकर मत देखते रहो।

(१८)

कथा वगैर के पास या जहाँ लोग बैठकर या खडे होकर किसी प्रकार का उपदेश सुन रहे हो, वहाँ अकारण ही बाजा बजा कर अथवा अन्य किसी प्रकार शोरगुल मचाकर उसमे विघ्न मत डालते रहो।

(१९)

कथा वगैर मे या जहाँ ज्ञान-चर्चा हो रही हो, वहाँ बातचीत मत करने लगो। चुपचाप बैठे सुनते रहो।

(२०)

इस बात का ध्यान रक्खो कि अपने मुँह से कही हुई बात कभी निष्फल न जावे। यह तभी हो सकता है जब कि अपनी बात को आप खुद पूर्ण करने का ध्यान रक्खे और बात को आगा पीछा सोच कर ही मुँह से निकाले।

(२१)

दुष्ट पुरुषों, विधर्मियों तथा नीच लोगों की नौकरी न करो। धार्मिक विद्वानों, उदार हृदयवाले, सदाचारी और कुलीन पुरुषों की ही नौकरी करना चाहिए।

(२२)

गधे, कुत्ते, गऊ, बैल, भैंस आदि पशुओं पर मत चढ़ो। मनु ने भी कहा है—

"गवां च यान पृष्ठेन सर्वथैव विगर्हितम्।"

(२३)

नदी के किनारे, ताल के किनारे, कुएँ के पास, मार्ग में या मार्ग के किनारे, फलवाले वृक्ष के नीचे, सूने घर में, पवित्र स्थान में और श्मशान में पाखाने मत जाओ।

(२४)

किसी अजायबघर, म्यूजियम अथवा कल-कारखाने को तुम देखना चाहो तो पहिले उसको देखने के नियमों को जान लो, तत्पश्चात् उसमें प्रवेश करो।

(२५)

जहाँ मनुष्य दूसरे का अपराध देखता है, वहाँ थोडा बहुत खुद का भी होता है। इसलिए अपने उस अपराध के लिए खुद को दण्ड दो और उस दोष को हटा दो, दूसरा मनुष्य आप ही आप सुधर जावेगा।

(२६)

यदि कहीं कुछ लिखा हो तो पहिले पढ लो और यदि उसकी कोई बात आप पर लागू हो तो उसका पालन करो, अन्यथा आगे मत बढ़ो।

(२७)

अपने दोनों हाथों से अपने सिर को मत खुजलाओ। नीति-शास्त्र भी इन्कार करता है —

"न सहताभ्यां पाणिभ्यां कण्डूयेदात्मनः शिरः।"

(२८)

यदि आप तरुण पुरुष हैं तो बालिकाओं और युवतियों को पढ़ाने का काम अपने हाथ में न लो।

(२९)

मृतप्राय अथवा मृत शरीर का किसी प्रकार से अपमान मत करो। बल्कि उस समय उसके साथ उत्तम से उत्तम व्यवहार करो।

(३०)

दुःख में पड़े हुए अपने शत्रु को भी मत सताओ; बल्कि जहाँ तक हो उसको सच्चे मन से कष्ट के समय में सहायता दो।

(३१)

किसी नीतिहीन अथवा चरित्रहीन मनुष्य की नौकरी न करो। जिसका नमक खाओगे वैसी बुद्धि होगी।

(३२)

हमें फूलों का बड़ा शौक है। परन्तु क्या हम उनका सदुपयोग करते हैं? फूल वृक्षों पर ही सब से अधिक भले मालूम होते हैं।

(३३)

सड़कों पर अथवा बागीचों में लगे हुए वृक्षों को बेंत आदि से चंचलता के कारण अथवा दतौन आदि के लिए तोड़ कर वहां की शोभा को नष्ट न करो।

(३४)

अपढ़ आदमियों को या स्त्रियों को देख कर उनका निरादर

न करो। सभ्यता की कसौटी अक्षर-ज्ञान नहीं, आचार है। तुम ध्यान से देखोगे तो मालूम होगा कि कितने ही अपढ़ मनुष्य बड़े सभ्य और शीलवान् होते है और पढ़े लिखे अभिमानी और और असभ्य। इसलिए सभी से आदरपूर्वक और सभ्यतापूर्वक व्यवहार करो।

(३५)

चोरी, व्यभिचार और जुआ आदि निंद्य कार्य देश की सभ्यता को कलंकित करनेवाले है, अतएव इन्हे रोकने का प्रयत्न करो।

(३६)

बालकों को चाहिए कि अपने घर की वस्तुओं को भी न चुरावें, वर्ना बड़े होने पर वे अव्वल नंबर के असभ्य बन जावेंगे। जो आदत बचपन मे पड़ जाती है वह बड़े होने पर बड़ी कठिनता से जाती है। पैसे चुराकर यदि मिठाई खाने की आदत पड़ गई, तो उम्र भर चटोरापन नहीं जावेगा। दैवेच्छा से यदि बड़े होने पर तुम्हारी आमदनी कम हुई तो मिठाई खाने आदि की आदत के लिए तुम निस्सन्देह चोरी करोगे, जुआँ खेलोगे, अथवा ऐसे ही बहुतेरे पाप-कर्म करोगे—इनमे तुम असभ्यो मे गिने जाओगे। इसलिए बचपन ही से किसी तरह की खराब आदत मत डालो।

(३७)

ऊपरी शान की अपेक्षा भीतरी सद्गुणो को बढ़ाना कहीं अधिक लाभदायी है। कोई तुम्हारी शान देखकर थोड़ी देर के लिए प्रभावान्वित हो जाता है। पर तुम्हारे गुण तो उसे हमेशा के लिए अपने वश मे कर सकते हैं। अत अपने गुणो को बढ़ाने की

ओर उपेक्षा की दृष्टि से देखना और शान की तरफ अधिक ध्यान देना बेवकूफी है।

(३८)

शान बढ़ाने के फेर मे लगोगे तो कुबेर की सम्पत्ति भी तुम्हे थोडी मालूम होगी। तुम शीघ्र ही दिवालिये हो जाओगे। गुण बढ़ाने मे एक से लगे रहोगे तो किसी दिन देश के महापुरुषो मे तुम्हारी गिन्ती होने लग जावेगी।

(३९)

हमेशा उपयोगी काम करते रहो। कभी बेकार न बैठो। बेकार राजा भी भिखमगे हो जाते है। हमेशा अपने पुरुपार्थ पर विश्वास रक्खो। और यह नियम बना लो कि प्रत्येक काम को हाथ मे लेने पर उसे पूरा करने पर ही दूसरे को हाथ मे लेगे। सौ काम अधूरे करने की अपेक्षा एक काम ही पूरा करना कहीं अच्छा है।

(४०)

अगर तुम यह चाहते कि लोग तुम पर विश्वास करे तो पहला नियम यह बनाओ कि "मै सदा सत्य ही बोलूंगा"। सत्यशील मनुष्य को यह कहने की जरूरत नहीं पडती कि "मै सत्य कहता हूँ"। लोग अपने आप उसकी बात मान लेते है।

(४१)

अगर कोई अपनी बात-चीत मे बार बार "मै सच कहता हूँ" "मेरी कसम" "आपकी कसम" आदि शब्दो का उच्चारण करे, तो समझ लो उसे झूठ बोलने की आदत है। उसकी बातो पर बहुत सँभल कर विश्वास करो।

(४२)

अपने अधिकारों से अधिक बल-प्रयोग करना अनुचित है। आप अपने को सरकारी नौकर मानते है सही, किन्तु यह भूल है। वास्तव मे आप उस जनता के नौकर हैं जिस पर कि सरकार शासन करती है। राजा, प्रजा द्वारा स्थित है, या यों कहिए कि प्रजा के कारण ही राजा है. इसलिए आप अपने को सबसे पहले प्रजा का और बाद में प्रजा के प्रतिनिधि राजा का नौकर समझो। इसलिए किसी भाई के साथ असभ्य बर्ताव करने का स्वप्न मे भी ख्याल मत करो।

(४३)

यदि आप सरकारी कर्मचारी है तो अपने से छोटों को मत दबाओ—उन्हें दबाने में अपनी महानता मत समझो क्योंकि सभ्यता तुम्हें ऐसा करने से रोकती है।

(४४)

रिश्वत लेना ठीक नहीं है। कई लोग इतने लोभी हो जाते हैं कि, बिना रिश्वत लिये किसी का जरासा भी काम नहीं करते। कभी कभी तो २।४ रुपयो के लिए लोगो की जान तक ले बैठते है।

(४५)

कुंए मे, गड्डे मे या रेल वगैर. की खिडकियों मे से बाहर की तरफ टाँगे लटका कर मत बैठो।

(४६)

बात बात पर कसम खाना अच्छा नही। हर किसी को वचन देना भी ठीक नहीं। हमेशा थोड़े वचन दो, और उनके पालन करने की खूब क़ोशिश करो। अपनी बात पर क़ायम रहने वाले पुरुष

ही संसार मे कुछ काम कर जाते हैं। जो वचनो को पालन करना चाहते है, वे वचन देते भी हैं सोच समझ कर। ऐसे लोगो के लिए आदर्श वाक्य है—"प्राण जाई बरु वचन न जाई।"

(४७)

समाज की सुविधा और सुव्यवस्था के नियमो का कभी मजाक न करो। इससे तुम्हारा लड़कपन जाहिर होता है और लोगो मे उन नियमो पर से श्रद्धा उठ जाती है, जिससे बड़ी गड़-बड़ी होने की सम्भावना रहती है।

(४८)

सड़क के किनारे के फर्लांगो के पत्थरो, मीलो के पत्थरो तथा अन्य ऐसे ही सूचना के लिए बने हुए चिह्नो को खराब मत करो क्योकि ये सब कुछ मनुष्य-समाज के हित के लिए ही हैं।

(४९)

गन्दे शब्दो के उच्चारण से समाज मे गन्दे भाव फैलते है। यह मानसिक गन्दगी समाज के मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को रोगी बना देती है। तब वह आदमी कितना मूर्ख और पापी है, जो दीवारो पर और रेलो मे गन्दी गन्दी गालियां लिखता फिरता है। कूओ मे या जलाशयो मे गन्दी विषैली चीजे डालने वाले को हम दण्ड देते है। तब इस मूर्ख को कितना दण्ड देना चाहिए जो समाज मे ऐसी गदगी फैलाता है?

सामाजिक व्यवहार

(१)

जब कोई बाहर के आदमी अपने पास बैठे हों तो हाथ पैर फैलाकर या उनकी तरफ पैर करके ऐसे बुरे ढंग से नहीं बैठना चाहिए जिससे दूसरे लोगों को बुरा मालूम हो या कष्ट हो।

(२)

जँभाई लेते समय हाथ अथवा रूमाल अपने मुख के आगे कर लेना चाहिए।

(३)

छींकते समय भी नाक और मुख के आगे अपना हाथ या रूमाल कर लेना चाहिए।

(४)

छींक के बाद इस बात का सदा ध्यान रखना चाहिए कि मूछों पर या छाती पर नाक का मैल या मुख का थूँक तो छींक के वेग से नहीं गिर गया है। यदि गिरा हो तो तत्काल उसे साफ कर डालना चाहिए।

(५)

लोगों की तरफ मुख करके छींकना या जँभाई लेना अनुचित है।

(६)

पान चबाने के बाद उसका पीक थूंकते समय विशेष ध्यान रखना चाहिए। किसी अच्छी जगह में नहीं थूकना चाहिए। इसका भी ध्यान रखना चाहिए कि किसी पर पीक न गिर जावे। पीक थूकने के बाद मुँह पोछ लेना चाहिए।

(७)

साधारण दशा मे किसी आदमी को सीटी बजाकर बुलाना ठीक नही है। ऐसे मनुष्यो को लोग बदमाश और गुण्डा कहते हैं। बहुत से लोग बाजार मे सीटी बजाते चलते है यह ठीक नहीं है।

(८)

बाजार मे चलते समय गलियों में देखना और ऊपर की ओर छज्जे तथा अट्टालिकाओ को देखना अनुचित है।

(९)

परिचित सज्जन मिलते ही पहले तुम उनका अभिवादन करो। उनके अभिवादन करने की राह न देखो।

(१०)

दिन छुपते समय और सूर्योदय के समय सोना, खाना पीना और रोना नही चाहिए।

(११)

ऐसी हँसी-मजाक न करो जो किसी को चुभ जाय। दूसरे की बुराइयो पर न हँसो। सज्जनता इसमे है कि तुम एकान्त मे उसकी बुराइयो की ओर उसका ध्यान आकर्षित कर दो। इससे उसका, आप का और समाज का भी कल्याण होगा।

(१२)

वह सत्य किसी काम का नहीं जिससे किसी का लाभ न हो, जिससे प्रेम न बढ़े। यदि तुम्हारे सत्यवादन से ये दो बाते नही होती है तो समझ लो कि तुम्हारा सत्य दूषित है।

(१३)

सवारी में बैठे हुए के लिए, वृद्ध, रोगी, स्त्री, स्नातक, अधा,

लँगड़ा, दूल्हा, राजा और बोझ वाले के लिए रास्ता छोड़ दो। मनुजी ने कहा है।

"चक्रिणो दशमीस्थस्य रोगिणो भारिण स्त्रियाः।
स्नातकस्य च राज्ञश्च पन्था देयो वरस्य च॥"

[१४]

पराये घर जा कर अपने मनमाने व्यवहार मत करो, बल्कि उसकी सुविधाओं का और उसके बनाये हुए नियमों का अच्छी तरह ध्यान रक्खो।

[१५]

शरीर को अधिक सजाना छिछोरपन एवं अज्ञान का लक्षण है। सादगी से भव्यता है।

(१६)

समय का ठीक ठीक पालन करने की आदत डालो और अपने घर काम भी ठीक समय पर ही करो। अपने जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ न जाने दो। समय पर काम करने के लिए घड़ी एक उत्तम साधन है। यदि आप घड़ी रखते हैं तो समय का मूल्य सीखो। शोभा अथवा शेखी के लिए घड़ी मत रक्खो।

(१७)

अपने द्वारा किये हुए अपराध को निर्भयता पूर्वक स्वीकार कर लो, और तुरन्त ही उसके लिए क्षमा माँगो। किन्तु अपराध करते जाना और बार बार क्षमा माँगते रहना नीचता है।

(१८)

किसी की धरोहर (अमानत) रक्खी हुई वस्तु, बिना मालिक की स्वीकृति के काम मे मत लाओ और न उसे बेचो ही।

(१९)

जब कोई अपना हितेच्छु आपको कुछ उपदेश-वाक्य कह रहा हो तो उसे ध्यानपूर्वक श्रवण करो। उस समय हँसना या लापरवाही दिखाना अनुचित है।

(२०)

लोगो के चलने फिरने की जगह फूटे काँच के टुकड़े या कॉटे मत डालो। बहुत से लोग बॅबूल आदि कँटीले वृक्षो की शाखा दतौन के लिए काट कर रास्ते मे चलते हुए उसके कॉटे साफ करते जाते है, यह ठीक नहीं। यदि मार्ग मे या ऐसी जगह जहाँ लोग घूमते फिरते हो, कोई कॉटा वगैर. नजर आवे तो हटा दो। कुओ, तालाबो, नदियो तथा दूसरे जलाशयो मे भी काँटे और टूटे काँच मत डालो।

(२१)

मोटर मे, रेल मे या ऐसी ही किसी दूसरी सवारी मे बैठे हुए बाहिर वाले लोगो को दिखाकर गन्दे सकेत मत करो।

(२२)

नहाते समय या वस्त्र धोते समय इस बात का ध्यान रखो कि किसी पर छींटे न गिरे।

(२३)

ऐसे शब्द अथवा वाक्यो का प्रयोग न करो जिन्हे सुननेवालो को लज्जा उत्पन्न हो।

(२४)

कभी जूआ न खेलो। जूआ बड़ा ही पातक खेल है। लोभ मे आ कर आदमी इसमे न जाने कैसे कैसे पाप करने लग जाता है।

(२५)

यदि आप किसी की निस्वार्थ सेवा थोड़ी बहुत भी तन से, मन से अथवा धन से कर सको, तो कदापि न चूको। और उसके बदले में कुछ पाने की आशा भूल कर भी मत करो।

(२६)

बिना मालिक-मकान के कहे किसी उच्चासन पर बैठने का कदापि प्रयत्न न करो। आसन पर बैठने मात्र ही से मनुष्य छोटा या बड़ा नहीं समझा जा सकता। महापुरुष धूल में बैठकर भी छोटा नहीं हो सकता और मूर्ख अथवा अमान्य व्यक्ति अत्युच्च आसन पर बैठकर भी महापुरुष नहीं बन सकता। कौआ ध्वजदंड के अग्रभाग पर बैठकर भी उतनी शोभा नहीं पाता जितनी कि हंस किसी तालाब के किनारे कीच में शोभा पाता है।

(२७)

व्याख्यान देते समय अथवा नाटक में पार्ट करते समय किसी व्यक्ति-विशेष की ओर या दिशा-विशेष की ओर अपनी दृष्टि मत लगा दो। उस स्थान में उपस्थित सब लोगों की ओर समय समय पर देखते रहो।

(२८)

व्याख्यान देते समय अपने हाथ पैरों और मुख आदि अंगों को अकारण ही अधिक मत हिलाओ। जल्दी जल्दी, सपाटे में भाषण मत करो। अपने हाथों को बारम्बार टेबल पर मत पटको और खूब फैली टाँगे करके मत खड़े हो। अपने खड़े रहने का ढङ्ग स्वाभाविक ही हो इस बात का ध्यान रक्खो। एक्टिंग इतना अच्छा होना चाहिए कि जिसमें स्वाभाविकता हो और लोगों को पसंद आवे।

(२९)

अपने पौरुष से जीविका प्राप्त करो। दीन बनकर टुकड़े न मांगो। परमार्थ के लिए माँगना शर्म की बात नहीं है—

"वन्दिनो दान मिच्छन्ति भिक्षामिच्छन्ति पशव ।
इह सत्पुरुषा सिहा अर्जन्ति स्वपौरुषात ॥"

(३०)

सभा-सोसाइटियो मे अपना मत बहुत सोच विचार के साथ प्रकट करो।

(३१)

नशेबाजो की सगति न करो। उन्हे यदि अपने उपदेशो द्वारा सुमार्ग पर लाना हो तो भले ही उनके पास थोड़ी देर के लिए चले जाओ। किन्तु इसके पूर्व, अपने चरित्र को खूब मजबूत कर लो।

(३२)

असभ्यो की संगति मे नहीं रहना चाहिए, क्योंकि ससार कसौटी है। वह संगति के कारण आपको भी खोटा कहेगा।

(३३)

विना किसी आवश्यकीय कारण के किसी सभा या समाज मे से एकदम उठकर मत चल दो।

(३४)

जहाँ ज्ञान-चर्चा हो रही हो—जैसे कथा, मौलूद, वाज, उपदेश व्याख्यान वगैर वहाँ सोओ मत। यदि नींद आने लगे तो उठकर अपने घर चल दो।

(३५)

होली के दिनो मे बहुत से लोग फोश गालियो द्वारा बड़े से

बड़े और सभ्य पुरुष का सम्मान करने को अपने जीवन का उद्देश मान लेते है—और अपने को उस मंडली का लाल बुझक्कड़ मान लेते हैं। यह उन लोगो की भूल है। किसी भी समय किसी भी रूप मे गालियाँ बकना हमेशा नीच कार्य है।

(३६)

"दीपक बुझ गया" ऐसा न कहो बल्कि "गुल हो गया, ठंडा हो गया, शान्त हो गया" वगैर शब्द बोलो। 'बुझ गया' शब्द अशकुन सूचक गिना जाता है।

(३७)

लायब्रेरी मे जा कर जिस अखबार या पुस्तक को आप देखना चाहते थे और यदि उसे उस समय कोई दूसरा व्यक्ति देख रहा हो—पढ़ रहा हो तो उसके हाथ मे से न छीनो। बल्कि उसके देख चुकने के बाद ही देखो। अत्यंत आवश्यकता हो तो उससे विनम्र शब्दो मे मांगो, यदि वह दे दे।

(३८)

सभा-समाज मे, अपनी इज्जत, पद और उम्र के अनुसार पहिले से ही अपना स्थान देखकर बैठो।

(३९)

पहिले से ही ऐसी जगह पर बैठो जहाँ से कोई उठा न सके। बैठते वक्त इसका ध्यान रक्खो कि किसी को आप के द्वारा कष्ट न पहुँचे और दूसरों को किसी तरह की असुविधा न हो।

(४०)

वेश्याओं के नाच मे मत जाओ। यदि कहीं मार्ग मे वेश्या समाज इकट्ठा हो रहा हो तो वहाँ खडे मत रह जाओ। बल्कि

ऐसे जलसो और उत्सवो मे भी मत जाओ जहाँ वेश्या का नाच-गान होने वाला हो।

(४१)

किसी के दुःख मे, मृत्यु के समय बिना बुलाये ही चले जाओ—बुलाने का मार्ग मत देखो। शत्रुता त्याग कर अपने शत्रु के भी दुःख मे शामिल हो जाओ।

(४२)

यदि किसी के यहाँ किसी तरह का उत्सव हो तो वहाँ बिना बुलाये कदापि न जाओ। यदि उस दिन या उस समय वहाँ पर कोई आवश्यकीय कार्य हो तो भी टाल दो। बल्कि उधर से आओ-जाओ भी मत।

(४३)

बाजार या गली मे जहाँ स्थान कम हो और भीड खूब हो, वहाँ कारणवश भी उस समय न ठहरो। ठहर जाने से लोगो के आने-जाने का काम रुक जावेगा और आपको भी तकलीफ का सामना करना पडेगा।

(४४)

नीच संगति से बिलकुल दूर रहना चाहिए—क्योकि संगति के अनुसार ही लोग आपको समझने लगेंगे। कलाली मे जा कर या कलाल से मित्रता करके भले ही आप मदिरादि का स्पर्श भी न करे किन्तु लोगो का आप पर भ्रम हो जावेगा। इसलिए ऐसी संगति मे जहाँ बैठने से लाञ्छन लगता हो, वहाँ भूलकर भी पैर मत रक्खो। धर्मशास्त्र भी इन्कार करता है।

"न संवसेच्च पतितैर्न चाण्डालैर्न च पुल्कसै. ।
न मूर्खैर्नावलिप्तैश्च, नान्त्यैर्नान्त्यावसायिभि ॥"

(४५)

किसी दूसरे मनुष्य के आगे अपनी पत्नी से अथवा पति से प्रेमयुक्त भाषण अथवा हँसी-मजाक न करो।

(४६)

यदि कोई आपको चिढ़ाने या कुढ़ाने के लिए कुछ इशारा अथवा वाक्य उच्चारण करे तो आप उस तरफ ध्यान ही न दे। यदि आप कुछ कहे-सुनेगे तो बात व्यर्थ ही बढ़ जावेगी। इसलिए उधर ध्यान देना ही ठीक नहीं। क्योकि—

"अगिन पडी तृण-रहित थल, आपुहि ते बुझि जाय।"

(४७)

बाजार मे पड़ी हुई रद्दी और लावारिस वस्तुओ को-जैसे सुतली कील, बिरजी, कागज, कौड़ी, फटा पुराना डब्बा आदि चीजो को-बटोरते फिरना ठीक नही है।

(४८)

किसी की गुप्त बात को जो आप को नहीं सुनाना चाहता हो सुनने के लिए व्यग्रता नही दिखानी चाहिए और न उसे सुनने का प्रयत्न ही करना चाहिए। छुप कर सुनने वाले लोग मूर्ख होते है।

(४९)

किसी भी सभा या संस्था का सदस्य नाम के लिए नहीं उसकी सेवा करने की इच्छा से बनो।

(५०)

अपने घर के लोगो के नाम यहाँ तक कि पशुओं के नाम भी

प्यारे, मधुर और गुणयुक्त रक्खो। बुरे नाम बदले भी जा सकते हैं। नामों पर से भी कुल, जाति, प्रान्त और देश की सभ्यता का अनुमान लगाया जाता है। इसलिए अर्थयुक्त, गुणसूचक और बोलने में प्यारे नाम ही रखना चाहिए। अच्छे नाम से उस आदमी को स्फूर्ति भी मिलती है। प्रताप जिसका नाम होगा वह राणा प्रताप से स्फूर्ति पायेगा। 'भूरा' और 'कल्लू' को कैसे स्फूर्ति मिलेगी ?

(५१)

किसी सभ्य व्यक्ति द्वारा मना किये जाने पर कोई बुरा काम मत करो। कई लोग इन्कार करने पर उस कार्य को दूना करते हैं, यह नीच पुरुषों का काम है।
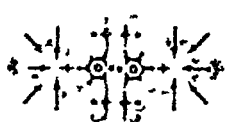
स्वच्छता

(१)

नाक साफ करते समय इस बात का ध्यान रक्खो कि ज़ोर की आवाज न हो। रुमाल मे नाक साफ करके जेब मे रख लेना ठीक नही है।

(२)

नाक का मल कफ और थूक वगैरह घृणा उत्पन्न करनेवाली चीजें ऐसी जगह डालनी चाहिए जहाँ लोगो की नज़र न पडे। यदि आम रास्ते पर कही थूँकना पडे तो उसपर फौरन धूल डाल दिया करो।

(३)

पान का पीक, या जरदे का पीक, दीवारो पर, व कोने मे किवाडो के पीछे या मन चाहे जहाँ नही थूँक देना चाहिए। खास करके दूसरे के घर मे इस बात का बहुत ही ध्यान रखना चाहिए।

(४)

लिखने के बाद अक्षरों को सुखाने के लिए स्याहीचट (ब्लाटिंग पेपर) की जगह अपने कपड़े की आस्तीन या कपडे का अन्य भाग लगाकर नही सुखाना चाहिए।

(५)

जहाँ पर लोग घूमते फिरते हो वहाँ मल, मूत्र, थूंक, नाक का मल और कफ वगैर डालना ठीक नही है।

(६)

जब देखो तब मुख मे अँगुली डाले रखना या दाँतो से नाखून काटना असभ्यता है। मनु महाराज ने कहा है कि —

"दन्तैर्नोत्पाटयेन्नखान्"

(७)

दिन मे सैकडो बार अकारण ही जहाँ तहाँ थूकते मत फिरो। यह बड़ी बुरी आदत है।

(८)

सो कर उठने के बाद बिना मुँह को साफ किये किसी से न मिलो—क्योंकि लार वगैर. के टपकने से, आँख वगैर के मल से और नाक पर की चिकनाई से बेहूदी सूरत बनी होती है।

(९)

अपने दाँतो को हमेशा साफ और सफेद रखो। जिसके दांत मैले है, उसका सारा शृंगार व्यर्थ है। दाँतो को या उनकी सन्धियो को काला रखना और रातदिन पान चबाकर दाँतो की जड़ो का तथा दाँतो को लाल बनाये रखना ठीक नहीं मालूम देता।

(१०)

भोजन कर चुकने के बाद घृतादि चिकने पदार्थों के कारण हाथ के नाखूनो मे हलदी या अन्न वगैर लगा रहता है, उसे धो-पोछ कर साफ कर डालना चाहिए।

(११)

जूठे मुंह कही बाहर नहीं जाना चाहिए, अर्थात् खाने के बाद पानी पी कर या कुल्ली करके ही बाहर जाना चाहिए। देखिए नीति मे भी कहा है.—

"नचोच्छिष्ट क्वचिद्व्रजेत् ।"

(१२)

रेल के डब्बे मे फर्श पर कफ मत डालो और न थूंको । जहाँ तक हो वहाँ तक फल वगैरः के छिलके डालकर कूड़ा भी न करो ।

(१३)

मुसाफिरखानो, सरायो, धर्मशालाओ तथा ऐसे ही दूसरे सार्वजनिक स्थानो को किसी भी तरह मैला और खराब मत करो । यदि कोई दूसरा करता हो तो उसे नम्रतापूर्वक समझा कर रोक दो ।

(१४)

पान खानेवाले के दाँत लाल हो जाते है । अतएव उन्हे साफ रखने का उसे सर्वदा ध्यान रखना चाहिए ।

(१५)

कई लोग थूंकने के लिए पीकदानी नामक पात्र अपने पास रखते हैं । उसे हाथ मे उठा उठाकर थूकते रहते है, और कई तो उसी पात्र के किनारे से अपने मुख की लार तक भी पोछ डालते हैं, यह ठीक नहीं मालूम देता ।

(१६)

किसी के यहाँ फर्श पर जाते समय इस बात का ध्यान रक्खो कि अपने पैर तो मैले नही हैं । ऐसा न हो कि आप बिना ध्यान रखे ही मैले पैर बिछौने पर चले जावे, और वह खराब हो जावे ।

(१७)

बहुत से लोग फैशन के रोग मे ग्रस्त होने के कारण जुराबें (मोज़े) पहनते हैं । गर्मी के दिनो मे पसीने, धूल और चमड़े

के जूतो के संयोग से यदि जुर्रावें दूसरे दिन धो कर साफ न की जावे तो उनसे एक प्रकार की दुर्गन्ध पैदा हो जाती है। ऐसे लोग जब जूते खोलकर किसी के पास बैठते हैं, तो बहुत दूर तक आसपास अपनी जुर्राबो की वदवू से लोगो के दिमागो मे बेचैनी पैदा कर देते है। इस वात का अनुभव उन जुर्रावधारी महाशय को नहीं होने पाता क्योकि यह बदवू धीरे धीरे उनके दिमाग को सुहाने लगती है।

(१८)

कुओ पर या जलाशयो के घाटो पर कफ वगैरः मत डालो, कुल्ली न करो और मिट्टी वगैरः न फैलाओ।

(१९)

शौचगृह मे पाखाना जाने के समय शरीर पर उत्तम वस्त्र न पहिने रहो। पाखाने के लिए एक फटी पुरानी धोती अलग रखनी चाहिए।

(२०)

अपना घर हमेशा साफ रक्खो। वस्तुओ को यथास्थान व्यवस्थित रखना ही साफ सुथरापन है और वस्तुओ का इधर उधर बेतरतीव फैलाये रखना ही गन्दगी है।

(२१)

पाखाने से आने के वाद जव तक मिट्टी लगाकर हाथ साफ न कर लो तव तक किसी भी वस्तु को न छुओ।

(२२)

मुख, हाथ या पैर धोकर अपने कुरते या धोती मे मत पोछो वल्कि इस काम के लिए एक कपड़े का टुकड़ा अलग ही रक्खो।

(२३)

भोजन करने के पहले हाथ, पाँव और मुँह को अच्छी तरह जल से साफ कर डालो और कुल्ली भी करो ।

(२४)

रात दिन काम मे आनेवाले पात्रो को माँज कर बिलकुल स्वच्छ रखो, उन्हें पीले या मैले मत रहने दो । कभी-कभी किसी तरह की खटाई वगैर से भी उन्हे साफ कर डालना चाहिए । बर्तन माँज कर यदि पानी से धो डाले जावें तो बड़ी ही उत्तम बात हो । कई लोग बर्तनो को बाहर से बहुत ही साफ रखते हैं किन्तु भीतर वे उतने साफ नही होते । अतएव बर्तनो को बाहर भीतर से बिलकुल स्वच्छ रखो ।

(२५)

हजामत बनाने के बाद स्नान अवश्य करो । यदि कारण-विशेष से स्नान नहीं करो तो जहाँ जहाँ बाल गिरे हो या चिपके हों उन अंगो को पानी से धो कर साफ कर डालो । बिना किसी प्रकार की सफाई किये बाल बनवाने के बाद बाजार मे या लोगों के पास मत जाओ ।

(२६)

मकान में व्यर्थ की टूटी फूटी रद्दी चीजो को अकारण ही सचय मत करो । यदि कोई माँगता है तो दे दो । फेकने की हो तो फेंक दो । काम मे लाने की हो तो काम मे लाओ, नहीं तो अग्निदेव के सिपुर्द कर दो ।

(२७)

घर को झाड बुहार कर तथा लीप पोत कर साफ रक्खो । साफ

पुरुषों के रहने का स्थान मैला होना उनकी सभ्यता को लांछन लगाता है। थोड़े से परिश्रम अथवा अल्प व्यय से मकान बिलकुल साफ रखा जा सकता है।

(२८)

जिस प्रकार बाहिरी पवित्रता की आवश्यकता है उसी तरह मन की पवित्रता भी जरूरी है। इसलिए आंतरिक पवित्रता भी रक्खो।

रहन-सहन ।

(१)

कान मे इत्र का फाहा रखना भद्दापन है । कान का वह गढ्ढा परमात्मा ने इत्र के लिए नहीं बनाया है । यदि इत्र लगाना हो तो कपड़ो मे लगा लेना ठीक है । कान मे इत्र का फाहा लगाना वर्त्तमान समय में ठीक नहीं समझा जाता ।

(२)

मुख पर और बालो मे इतना अधिक तेल मत लगाओ, जो दिखाई दे । अधिक खुशबूदार तेल लगाना विलासिता का सूचक है ।

(३)

अन्न को और खासकर भोजन के लिए तय्यार किये हुए अन्न को तो कभी पैर से मत ठुकराओ ।

(४)

वर्त्तनो को उठाते समय या रखते समय उनके आपस मे टकराने का या रक्खे जाने का शब्द मत होने दो ।

(५)

बरतनो को पैरों से न ठुकराओ, और इस बात का ध्यान रखो कि भूल से भी बरतनों को पैर न लग जावे ।

(६)

दरवाज़ों खिड़कियों के किवाड़ो को खोलते वक्त या बन्द करते वक्त भड़ाभड़ न पटको ।

(७)

कुर्सी, स्टूल, तिपाई, मेज, चारपाई आदि वस्तुओ को रखते वक्त या इधर-उधर हटाते समय ज़ोर-ज़ोर से पटका-पटकी और खींचातानी मत करो।

(८)

बिना किसी बीमारी के अपनी आँखो मे रात दिन काला सुर्मा लगाना ठीक नही है।

(९)

पुरुषो के लिए दाँतो मे मिस्सी लगाना अनुचित है। ऐसे मर्द जो मिस्सी लगाते है उनका मुँह जनाना सा मालूम पड़ने लगता है।

(१०)

सोते समय इस बात का खूब ध्यान रक्खो कि आपका हाथ कही मूत्रेन्द्रिय अथवा अन्य किसी ऐसे ही किसी गुप्त स्थान पर न रक्खा हो।

(११)

बहुत से मनुष्य नंगे हो कर सोते है, यह ठीक नही है। मनुष्य कभी-कभी नीद मे ऐसा चौक पड़ता है कि शय्या पर से भागने और दौडने लगता है। यदि उस समय नंगा हुआ तो आप ही खुद विचार लीजिए कि उसे कितना लज्जित होना पड़ेगा। इसीलिए मनुजी ने कहा है—

"न च नग्नः शयीतेह।"

(१२)

बिलकुल नंगे हो कर कभी मत नहाओ। यदि साधू वैरागी ऐसा करें तो करने दो। क्योंकि आजकल के बहुत से साधु रात

दिन नंगे रहते हैं, फिर यदि वे स्नान नग्न रूप में करें तो आश्चर्य ही क्या ?

(१३)

स्नान करते समय इस वात का ध्यान रक्खो कि गोपनीय स्थान कपडे के अन्दर से भी लोगो को नहीं दिखने पावें। स्मरण रहे कि महीन कपड़े भीग जाने पर शरीर से चिपक जाते हैं और मनुष्य बिलकुल नंगा दिखाई देने लगता है। इसलिए मोटे कपड़े-खादी पहनना सभ्यता है।

(१४)

यदि खुजली चले तो अग पर से कपड़ा हटा कर न खुजलाओ। कई महाशय जाँघ वगैरः खोल कर खुजलाते हैं, यह बहुत ही भद्दी आदत है।

(१५)

लोगो के सामने घुटने उघाड़ कर मत बैठो। कटि के नीचे ऐसा वस्त्र धारण न करो जो घुटनो से ऊँचा रहे। त्यागी लोग जो केवल लंगोटी ही लगाते हो उनके लिए यह नियम नही है।

(१६)

मुख मे कपड़ा, तिनका, कागज, वगैरः डालकर चबाते रहना ठीक नहीं है, यह लक्षण अशुभ तथा दीनतासूचक है।

(१७)

सिवा मूत्र-त्याग के समय के कभी अपने जननेन्द्रिय को स्पर्श न करो।

(१८)

अकारण ही ऐसे आदमी से, जिससे आपका कुछ भ

सम्बन्ध न हो अपने दिल की बातें न कहते फिरो और न ऐसी बातो ही मे अपना सिर खपाओ जिनसे आप का कोई सम्बंध नहीं है।

(१९)

बाजारो में, गलियों मे, अवारे की तरह बेकार मत घूमो। यदि कुछ काम न हो तो चुपचाप अपने घर मे बैठे-बैठे चरखा कातते रहो। गलियो मे बेकार चक्कर काटने की अपेक्षा घर में चरखा कातना कितना अच्छा है?

(२०)

चकलो मे, जहाँ व्यभिचारिणी स्त्रियाँ और वेश्याएँ रहती हो उस जगह, मत घूमो फिरो। उस रास्ते से यदि जाने आने का काम पड़े तो दूसरे मार्ग से जाओ, भले ही चक्कर क्यो न पड़े। क्योकि बदबूदार स्थान के पास से जाने पर बदबू आती ही है।

(२१)

अपने खानगी बरतावों को और ऐसी ही अन्यान्य गुप्त बातों को लोगो के सामने प्रकट मत करो। क्योकि—

"तुलसी निज मन की व्यथा, भूल न कहिये कोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।"

(२२)

किसी काम के करने में जल्दबाजी कभी मत करो, बल्कि खूब सोच विचार कर उसके अंतिम परिणाम का ध्यान रखते हुए करो। क्योकि—

"बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय।"

(२३)

अहंकार मत करो। यह बड़ी बुरी आदत है। इससे आदमी

बिलकुल बर्बाद हो जाता है। हाँ, अपने चित्त से आत्माभिमान मत खोओ। अहंकार से मनुष्य का पतन होता है और स्वाभिमान से मनुष्य उन्नत होता है।

(२४)

बिना किसी महान् दुःख के लम्बी आहें मत लो। जँभाई या डकार के बाद "हाय हाय" शब्द अनायास ही निकल जाता है। यह बहुत बुरी बात है—इसे भुलाने का प्रयत्न करो।

(२५)

पति-पत्नियों को रात्रि के समय बातचीत बहुत ही आहिस्ता आहिस्ता करनी चाहिए ताकि कोई घर का मनुष्य अथवा पड़ोसी न सुन सके।

(२६)

कसरत, औषधि सेवन और मैथुन ये तीन काम लुकछुप कर ही करने चाहिए। इन्हे दिखाने मे अपनी शेखी नही समझनी चाहिए।

(२७)

समझदार बालको को, अपने पास ले कर पति-पत्नी को नहीं सोना चाहिए। ऐसे समय आपस मे हँसी दिल्लगी अथवा अन्य किसी प्रकार की कामचेष्टा भी नहीं करनी चाहिए। बच्चो को अबोध न समझो वे सब कुछ समझते हैं।

(२८)

नींद मे खर्राटे न भरो। यह आदत हटाई जा सकती है। खर्राटे के समय मनुष्य जिस करवट सो रहा हो, उसके विरुद्ध करवट बदलने से खर्राटा कम हो जाता है। सोते समय मुँह बन्द रखने से भी खर्राटा होना रुक जाता है।

(२९)

छड़ी, बेत, लकड़ी आदि को हाथ मे लेकर व्यर्थ ही हिलाते हुए या घुमाते हुए मत चलो। इससे चित्त की चंचलता प्रकट होती है। उस छड़ी से मार्ग मे के कुत्तो और पशुओं तथा वृक्ष-लतादि पर प्रहार मत करो।

(३०)

मकान की सफाई और सजावट उसमे रहनेवाले मनुष्य के मन का सच्चा प्रतिबिम्ब है। चतुर मनुष्य मकान को देखकर ही उसमे रहनेवाले के स्वभाव का अनुमान कर लेते हैं। मान लो कि घर मैला और जहाँ तहाँ बिखरी हुई चीजो से भरा है, तो समझा जायगा कि इसमे रहनेवाला मनुष्य गन्दा और आलसी है। यदि औरतो के चित्र बहुत हो तो विलासी है, इत्यादि।

(३१)

रुपये, पैसे यदि आपके जेब मे या हाथ में हो तो उन्हे बताने की इच्छा से मत बजाओ। यदि वे स्वयं चलने हिलने के कारण बजते हो तो उन्हे मत बजने दो। क्योकि उनके बजने से, जिसके पास हैं, उसका ओछापन झलकता है।

(३२)

गरीबी असभ्यता नहीं है बल्कि आचार और व्यवहार आदि का ख़राब होना असभ्यता है, अतएव जहाँ तक हो सके सदाचारी बनने का निरन्तर प्रयत्न करो। फिर आप थोड़े ही दिनो मे अपने को महान् सभ्य पावेंगे।

(३३)

व्याख्यान देते समय, सभा मे, चलते फिरते हुए लोगो में

अपनी राने मत खुजलाओ; नहीं तो लोग हँसी करेंगे। रानो मे दाद वगैर. बीमारी के कारण खुजाल चलती है तब जरा खयाल रक्खो कि हम कहाँ है ?

(३४)

यदि कहीं खुजली मालूम हो तो जल्दी-जल्दी घरड़-घरड खुजलाना ठीक नही, बल्कि धीरे-धीरे और चुपचाप खुजलाओ।

(३५)

नींद से उठते ही कई लोग अपने सारे शरीर को कभी कहीं से और कभी कहीं से खुजलाने लगते हैं, यह वानरी क्रिया अनुचित है।

(३६)

किसी की आवाज को सुन कर, निद्रा मे चौंक कर या हड-बड़ा कर चिल्ला उठना, भागने लगना या उन्मत्त की भाँति इधर उधर भागने लगना ठीक नही है।

(३७)

घर मे कलह मत होने दो और खुद भी अपने घर के लोगो पर जब कभी नाराज होओ तब इतने जोर-जोर से चिल्ला कर मत बोलो कि अड़ोसी-पड़ोसी तक इकट्ठे हो जावें और दूसरे लोग तमाशा देखे तथा आपके घर की कई गुप्त बातें जान ले।

(३८)

बहुत से मनुष्य अपने बैठने के कमरे मे नग्न और फोश स्त्री पुरुषो के चित्र लगाते है, यह अनुचित है। मनुष्य को चाहिए कि सौन्दर्य्य की दृष्टि से भी औरतो के चित्र अपने कमरे मे न लगावे। ऐसे चित्रों से निर्बलता उत्पन्न होती है।

(३९)

जहाँ तक हो अकारण ही छाती, पैर और हाथो के बाल कैंची या अस्तुरे से नही कटाने चाहिए।

(४०)

मुँह मे कपडे लेने और उन्हे चबाते रहने की आदत मत डालो।

(४१)

"High thinking and plain living" अर्थात् उच्च विचार और सादा जीवन बनाओ।

(४२)

अपने वस्त्रो मे जूँ और खटमल होने ही मत दो। यदि हो जावे तो उन्हे दो चार आदमियो के सामने ढूँढ़-ढूँढ़ कर मारना आरम्भ मत कर दो। बल्कि ऐसे काम करते समय शरमाओ। क्योकि वह मैलेपन का इजहार है। अतएव उन स्वेदज जीवो को एकान्त स्थान मे ही निवारण करो और उन्हे पकड़ कर किसी दूसरे के वस्त्रो मे भी मत छोड़ो।

(४३)

हम कानो से अच्छी बाते सुने, आँखो से शुभ पदार्थो को ही देखे और अग-उपांगो द्वारा सदा शुभ कार्यों को करते रहें। सारांश यह कि हमारे शरीर का रोम रोम सदा कल्याण-पथ का अनुगामी हो। यह हमारी प्राचीन सभ्यता की पराकाष्ठा है।

पहिरावा

(१)

जातीय अथवा अपने देश की पोशाकों को छोड़कर, देखा देखी अन्य पोशाकें नहीं पहिननी चाहिए।

(२)

फैशन के विरुद्ध कपड़े मत पहिनो। जैसे अँगरखा पर कोट, कोट पर कुरता या कोट पर वास्कट (फितोई)।

(३)

फटे हुए कपड़ों को सिलाकर पहिनना ठीक है। सिले हुए पैबन्द लगे कपड़ों को पहिनने में कोई शर्म की बात नहीं है, हाँ, फटे, लटकते हुए और मैले कपड़ों को पहिनना ठीक नहीं है।

(४)

कपड़े हमेशा साफ-सुथरे पहिनो। वे कम कीमत के और मोटे भले ही हों, किन्तु साफ हों। बहुमूल्य रेशम या मखमल के फटे और मैले न हों। भड़कदार कपड़े पहिनना अच्छा नहीं।

(५)

पगड़ी और कुरते के साथ बूट तथा देशी जूतों पर कोट पतलून पहिनना अनुचित है। मेरे विचार से तो जो लोग कोट-पतलून पहिनें उन्हें हेट (अंग्रेजी टोप) ही लगाना शोभाप्रद होता है।

(६)

फैशन (पहिनावे) में आधे तीतर और आधे बटेर मत बनो। यदि विदेशी पहिनावा पसन्द है तो सिर से पैर तक वही हो। किन्तु आधा देशी और आधा विदेशी ठीक नहीं।

(७)

वहुत से लोग रातदिन मे दो चार वार अपने कपड़ो को वदलते हैं। इसमे वे अपनी धनाढ्यता समझते है, किन्तु गिरगट की भाँति पोशाको द्वारा अपने रङ्ग को बदलते रहना वहुरूपियो का ढङ्ग है। हाँ, दिन की और रात की पोशाक अलग अलग रखना कोई बुरी बात नही है। इसी तरह घर की और ऑफिस की पोशाक रखना भी अनुचित नहीं कहा जा सकता। जो अकारण ही अपनी शेखी दिखाने के लिए वस्त्रो को बदलते हैं, यह अनुचित है।

(८)

आभूषण पहना सभ्यता नही है। आभूषणो से घर मे लडाई होती है। आभूपण बनाने के लालच से आदमी सचाई छोड़ देता है। और बदमाश लोग आभूपण उड़ाने की लालच मे आ कर वच्चो को और अकेले-स्त्री पुरुषो को मार भी डालते हैं।

(९)

सिवाय उन लोगो के जिनकी जाति मे, देश मे अथवा धर्म में सिर नंगा रखते है, सिर के वालो मे तेल फुलेल डालकर पट्टियाँ बनाकर उन्हे दिखाने के इरादे से नंगे सिर घूमना अथवा उन्हे जान बूझकर पगड़ी, टोपी, साफे आदि से बाहर निकालकर रखना ओछेपन का द्योतक है।

(१०)

ऐसी फटी जुर्राबो से तो कि जिनमे से पैरो की एड़ियाँ वाहिर निकलती हो, नही पहिनना ही अच्छा है। कुछ लोग वे-जोड़ जुर्राबें पहिनते है। एक किसी रग की तो दूसरी किसी रंग की

होती है। यह बुरा है। जुर्राबो को बंधों से बांध कर रखना चाहिए। लटकती हुई जुर्रावे पहिनना ठीक नहीं।

(११)

चोटी को, टोपी साफे या पगडी से वाहिर निकली हुई मत रहने दो।

(१२)

अपनी अवस्थानुसार पोशाक भी बदलते जाओ। बच्चो की सी गोटे, कलाबत्तू अथवा सलमेसितारे से मढी हुई टोपी. जवानी या बुढ़ापे मे अच्छी नहीं मालूम देती।

(१३)

जूते, वस्त्र, जनेऊ, आभूपण और माला को, यदि ये दूसरे के धारण किये हुए हैं तो आप मत पहिनो। स्मृतिकार कहते हैं–

"उपानहौ च वासश्च धृतमन्यैर्नधारयेत्।
उपवीतमलंकारं स्रजं करकमेव च॥"

(१४)

दूसरे के पहिने हुए वस्त्र को पहिनना पुरुषार्थ हीन लोगो का काम है। बहुत से लोग नीलाम मे पुराने वस्त्र वगैरः खरीद लेते हैं। और ऐसे वस्त्रो को, जिन्हे विदेशी रमणियाँ पहिनती हैं उन्हे यहाँ के मनुष्य पहिनते है, यह कितनी लज्जा की बात है?

(१५)

जूतो के सिवाय चमडे की बनी हुई चीजो को अपने शरीर पर धारण करना हिन्दुओ के लिए असभ्यता का चिन्ह समझा जाता है। क्षत्रिय वर्ण तलवार का म्यान, पडतला वगैर चमडे के काम मे लावें तो कोई हर्ज नही किन्तु व्यर्थ ही गेटिस, गेलिस,

बेल्ट, चेन, और टोपी वगैरः मे चमड़े को काम मे लाना अनुचित है। युद्ध के कार्य मे यदि शरीर पर चर्म धारण करना पडे तो कोई हानि नही।

(१६)

जहाँ तक हो सके, मनुष्य को जेवरो से बचाव करना चाहिए।

"नराणाम् भूषणं रूपम् रूपाणा भूषणं गुणम्।
गुणानाम् भूषण ज्ञानम् ज्ञानानाम् भूषणं क्षमा।"

(१७)

वैदिक सभ्यता स्वर्णादि बहुमूल्य धातु के आभूषणो को पहिनने की आज्ञा देती है किन्तु वे असभ्यता के सूचक न हो।

(१८)

धोती को घुटने तक ऊँची, या पीछे की ओर ध्वजा की तरह फहराती हुई तथा पीछे की तरफ इतनी मत ठूँसो जो पुटलिया सी बन जावे।

(१९)

ऊँचे और ओछे वस्त्र कदापि मत पहिनो। अधिक लम्बे और ढीले भी मत पहिनो।

(२०)

बहुत से लोग ऊपर का वस्त्र जो लोगो को दिखाई पड़ता है, बड़ा ही साफ पहिनते हैं और अन्दर का वस्त्र जो शरीर से लगा हुआ रहता है वह इतना मैला, गन्दा और बदबूदार होता है कि उसे देखने से ही नफरत पैदा होती है। अतएव बदन पर के सभी वस्त्र साफ और सुथरे रखो। दिखावे की जरूरत नही है।

उठना बैठना चाल ढाल ।

(१)

पैर फटकार कर या पटक कर "धमाधम" शब्द करते हुए चलना ठीक नही है । पैर घसीट कर अथवा जूतियॉ घसीटते हुए, धूल उडाते हुए चलना बुरा है ।

(२)

चलते समय अपनी टाँगे फेक कर चलना, टॉगो को इधर-उधर घुमाकर रखना, चूतड, कमर या सिर को हिलाना ठीक नही है।

(३)

चलते समय दोनो हाथो को खूब झुलाना, एक को झुलाना और दूसरे को अकारण ही बन्द रखना तथा हाथो की अँगुली या अँगुलियो को छितरा कर—फैलाकर चलना ठीक नही है ।

(४)

चाल-ढाल मे बनावट का होना ठीक नहीं, उसमे स्वाभाविकता होनी चाहिए । हाँ, यदि कुछ दोष हो तो उसे दूर करने का सदा ख्याल रक्खो ।

(५)

नीची निगाह से ही चलना चाहिए । इधर-उधर देखते हुए चलना, या अकड़ कर छाती-सीना निकाल कर चलना अनुचित है।

(६)

चलते समय ध्यान रक्खो कि पैरो से धूल न उड़े । और यदि उड़ती हो तो हवा के रुख को देखकर चलो, जिससे वह उड़कर किसी अन्य महाशय पर न गिरे ।

(७)

बाजार में अकारण दौड़कर आना-जाना अनुचित है।

(८)

अपने दोनो घुटनो को हाथो से पकड़कर उनमे सिर दे कर बैठना मूर्खता की खासी पहचान है।

(९)

बाजार मे या गलियो मे सीटी बजाते हुए, गाना गाते हुए, माथे मे मॉग पट्टी निकाल कर, सिर उघाड़े, माला पहन कर, तीतर, आदि का पिंजरा ले कर अथवा बारीक वस्त्र पहनकर, छड़ी या डण्डे मे फूल माला लपेट कर घूमना ओछापन है—कमीनो का काम है।

(१०)

घर के द्वार मे बैठना या चौखट मे टॉगे अडाकर बैठना अच्छी बात नही है।

(११)

लम्बी टॉगे कर के—टाँग पर टॉग रख कर अर्थात् पैरो मे आँटी डाल कर बैठना ठीक नहीं होता।

(१२)

व्यर्थ ही हाथ-पैरो की अँगुलियो को तथा अङ्ग के अन्यान्य भागो को चटकाना (कटकाना) ठीक नही। बहुत से लोगो की एक आदत सी हो जाती है कि वे व्यर्थ ही हाथो की अँगुलियाँ चटकाया करते है। यह बहुत बुरी आदत है।

(१३)

प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क मे रात-दिन विचारो का तॉता बँधा,

रहता है, किन्तु उसे बडबड़ाकर होठ हिला कर, मुँह की बनावट तथा हाथों के इशारो द्वारा न होने देना चाहिए ।

(१४)

जब कि आप ऊकडू अर्थात् पंजो के बल बैठे हो तब ध्यान रक्खो कि आपका कोई गुप्त अग तो सामने बैठनेवालो को नहीं दीख रहा है।

(१५)

चलते समय कंकर को, मिट्टी को, लकडी को या अन्य किसी प्रकार की वस्तुओं को पैर से ठुकराते हुए चलने का स्वभाव मत डालो। यह आदत प्राय. फुटबाल के खिलाडियो मे होती है, अतएव फुटबाल-प्रेमी विशेष ध्यान रक्खें ।

(१६)

टेबल (मेज) वगैर बैठने की वस्तु नहीं है, इसलिए बैठने की जगह पर ही बैठो। बहुत से महाशय लिखते हुए व्यक्ति की टेबल पर ही लद जाते है। यह अत्यन्त मूर्खों का काम है। इसी प्रकार कुछ लोग कुर्सी के हाथों पर ही बैठ जाते है, यह आदत भी बहुत बुरी है।

(१७)

खेलते समय या हर्ष के समय चीत्कार करना, कोलाहल मचाना या जोर-जोर से शब्द करना जंगलीपन है।

(१८)

रात्रि के समय जब कि लोग अपने-अपने स्थानो मे सो रहे हो, सड़कों से व्यर्थ ही हल्ला, गुल-गपाड़ा मचाते हुए निकलना बहुत ही बुरी बात है।

(१९)

गर्मी के मौसिम मे लोग अपने-अपने आंगनो मे, घर के बाहर चबूतरो पर, बाजार या गलियो के चबूतरो पर सोते है; किन्तु उन्हे लोगो के जगाने के पूर्व ही उठकर बैठ जाना चाहिए। क्योकि नीद मनुष्य की अचेतन दशा है, ऐसी दशा मे कइयो की धोतियाँ खुल जाती है, कइयो के गुप्त अग खुल जाते है, गर्मी होने के कारण वस्त्र न ओढ़कर उघाडे ही सोते है। यह असभ्यता है। या तो बाहर न सोवे और सोवे तो फिर अँधेरे ही अँधेरे शय्या से उठ खडे हो।

(२०)

सब से अच्छी बात तो यह है कि लोग गलियो और बाजारो के चबूतरो तथा दूकानो के आगे खुले बरामदो मे सोने ही नहीं। क्योकि बाजारू कुत्ते या तो उनके बिछौनो मे सोते हैं या उनपर मल और मूत्र त्याग जाते है।

(२१)

लडको तथा नवयुवको! गँजेड़ी, भँगेड़ी, मदकची, अफीमची, शराबी, तम्बाकू सेवन करनेवाले और चाय वगैर' पीनेवाले व्यक्तियो को हरगिज सभ्य मत समझो—उनका साथ भूलकर भी मत करो।

(२२)

लड़को! विद्वान पुरुषो की संगति मे ही अपना समय बिताओ। विद्याव्यसनी पुरुषो के पास ही बैठो, उनकी बाते ध्यान से सुनो और तदनुसार आचरण करो। संभवत. इस समय मूर्ख समाज तुम्हे वहाँ से हटाने की अनेक प्रकार से कोशिशे करेगा किन्तु तुम अपने सुमार्ग पर निर्भयता पूर्वक डटे रहो।

(२३)

लड़को ! बचपन से अधिकतर औरतों में उठने-बैठने की आदत मत डालो । नहीं तो यह सत्य समझ लो कि आगे चलकर तुम्हारे चाल-चलन और रहन-सहन में थोडा-बहुत जनानापन जरूर आजायेगा ।

(२४)

लड़को ! अपने देश की सभ्यता तुम्हें लड़कियों के साथ खेलने के लिए मना करती है, इसलिए लड़कियों में मत खेलो । उनके पास एकान्त में मत रहो । उनसे अधिक समय तक बात-चीत मत करो ।

(२५)

बाजारों में जहाँ मनुष्य फिरते-घूमते हों, वहाँ गले में हाथ डालकर या कन्धों पर हाथ रखकर घूमना-फिरना या खडे होना ठीक नहीं है । हाथ में हाथ डाल कर चलना, अथवा उसे झुलाते चलना अनुचित है ।

(२६)

बाजारों में खडे रहकर आपस में झूम झामकर लिपट-चिपट कर, अथवा धक्कमधक्का करके प्रेम प्रदर्शित करना बेहूदापन है ।

(२७)

चलते समय अपने साथ चलने वाले से अडकर चलना तथा उसके चलने में असुविधा उत्पन्न कर देना मूर्खों का काम है ।

(२८)

चलने वक्त थूकते हुए चलना अच्छा नहीं । यदि थूकना ही हो तो हवा का रुख देखकर थूकना चाहिए ताकि किसी दूसरे व्यक्तिपर थूक के छींटे न गिरने पावें ।

(२९)

कन्धो के पीछे हाथो को गर्दन पर रख कर चलना अनुचित है। रावण के सिरो की तरह हाथो को गर्दन पर जमाकर नही चलना चाहिए।

(३०)

कमर पर हाथ रखकर चलना, या खड़ा होना भद्दापन है। इससे जनानापन झलकता है।

(३१)

चलते वक्त बेत अथवा छतरी हिलाते हुए न चलना चाहिए। और लकडी को गर्दन पर रख कर और न उसपर पीछे से दोनो हाथ रख कर चलना चाहिए। इसी तरह कमर पर पीछे लकड़ी जमा कर उसमे हाथ डालकर चलना भी बुरा है।

(३२)

मुँह मे बीडी या सिगरेट दबाकर यत्र तत्र बाजारो मे, गलियो मे, सड़को पर घूमना ठीक नही है। माना कि इसमे आप अपनी शान समझते है, किन्तु ऐसा करना ओछापन है। यह कोई ऐसा उत्तम अथवा जनता को लाभ पहुँचानेवाला काम नही है जिसे बड़े गर्व के साथ इधर-उधर दिखाते हुए घूमना चाहिए। कुछ लोग हुक्का और चिलम भी चलते फिरते पीते है, यह जंगलीपन है।

(३३)

अकारण ही वंशी वगैर वाद्य को बजाते हुए बाजारो अथवा गलियो मे से नही निकलना चाहिए। कुछ लोग "माउथ-हार्मोनियम" (मुँहका बाजा-विशेष) बजाते हुए इधर-उधर घूमा करते यह बहुत ही बुरा है।

बात-चीत

(१)

अपने मे बडे तथा मान्य पुरुषो के साथ, शान्ति, नम्रता और अत्यन्त बुद्धिमानी से बात-चीत करनी चाहिए। ऐसा न हो कि आप उनकी नजर में उद्दण्ड, मूर्ख अथवा घमण्डी ठहरे।

(२)

दिल्लगी और मजाक का सम्बन्ध समयवस्क व्यक्ति से ही ठीक मालूम देता है। पूज्यो, वयोवृद्धों और अपने से छोटो से हँसी मजाक करना अनधिकार चेष्टा है।

(३)

दिल्लगी मजाक में गन्दे और फोश शब्दो का प्रयोग समवयस्क मनुष्यों के साथ भी नहीं करना चाहिए।

(४)

मजाक का विषय हमेशा गहरा, आलंकारिक और सभ्यतापूर्ण हो जो साधारण समझ के लोगो की समझ मे एकाएक न आ सके, जिसके समझने मे थोड़ी अक्ल खर्च करनी पडे।

(५)

लोगो के साथ बात-चीत के समय महाशय, जनाब, श्रीमान् मित्र, मेहरबान, साहिब, बाबू, भाई आदि शिष्टाचार-सूचक शब्दो का यथायोग्य व्यवहार करो।

(६)

किसी के साथ बात-चीत करते समय, हाँ या ना के स्थान पर

"जी हाँ" "जी नहीं" अथवा अन्य किसी प्रकार के ऐसे ही शिष्ट वाक्यो का प्रयोग करो ।

(७)

अपने पूज्य अथवा मान्य पुरुष के खड़े हुए बातें करने पर खुद बैठे न रहो। बल्कि, उनके सामने खड़े हो कर बात-चीत करो।

(८)

किसी के प्रश्न का उत्तर कठोर वचनो से कदापि न दो। नीतिकारो ने कहा है—

"सत्य ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्"

और

"भद्रं भद्रमिति ब्रूयाद्भद्रमित्येव वा वदेत ।"

(९)

गालियाँ बकना बडी बुरी बात है। इस बात का ध्यान रक्खो कि कभी क्रोध मे भी अपने मुँह से किसी के लिए गाली न निकले। कई लोगो की एक आदत-सी पड जाती है कि बात-चीत करते समय भी बात-बात से गाली बोलते रहते है। यह उनकी टेक-सी हो जाती है। इसलिए इस तकिया कलाम को छोड़ देने की कोशिश करनी चाहिए।

(१०)

कई लोग अपने मित्रो तथा निकट सम्बन्धियो से, जिनके साथ मजाक-दिल्लगी का अधिकार होता है, गाली आदि का बड़े ही फख्र और प्रेम के साथ व्यवहार करते हैं, यह बात बिलकुल अनुचित है। गाली का प्रयोग प्रेम से भी न करना चाहिए।

(११)

जिसके साथ बात-चीत अथवा थोड़ा भी व्यवहार करना हो

पहले उसका स्वभाव पहचान लो। उसके बाद स्वभाव के अनुसार काम करो। किसी अपरिचित व्यक्ति से पहली भेंट मे ही ऐसा व्यवहार न करो जैसा किसी परिचित से करते हो।

(१२)

यदि स्वीकार करने योग्य बात है और उसे आप का मन मान रहा है तो उसे बिना किसी भय के मान लो। व्यर्थ ही जिद्द मत करो।

(१३)

जिन शब्दो का आपको शुद्ध उच्चारण न आता हो उन्हे न बोलने का ध्यान रक्खो। शुद्ध रूप मालूम हो जाने पर ही उन शब्दो का प्रयोग करो। बहुत से लोग संस्कृत, अरबी, फारसी और अँग्रेजी आदि भापाओ को न जानते हुए भी उन भाषाओ के शब्दो का प्रयोग करते है—यह अनधिकार चेष्टा करना ठीक नहीं है।

(१४)

अपने मुँह से शुद्ध, उत्तम, मधुर और शिष्टतायुक्त वाक्यों को ही निकालो। किसी कवि ने कहा भी है—

"वशीकरण यह मंत्र है तज दे वचन कठोर।"

(१५)

बिना बोलाये अकारण ही किसी की बात-चीत मे दखल देना ठीक नहीं है। जब कोई आपसे बोले तभी उससे बोलो। या बोलना जरूरी हो तो पहले उससे बोलने की इजाजत ले लो।

(१६)

जो कुछ भी किसी से कहो, उसे हमेशा पूर्ण करने का

खयाल रक्खो। यदि करने का इरादा ही न हो तो किसी को किसी बात के लिए वचन भी मत दो।

(१७)

बहुत से लोगो की आदत होती है कि बात-चीत करते समय बीच-बीच मे "क्या नामरे" "जो है सो" "या प्रकार करके" इत्यादि शब्दो की टेक-सी लगाते हैं। यह आदत ठीक नही है; इसे बिलकुल भुला दो।

(१८)

बात-चीत करते समय मुँह, आँख, नाक और हाथ वगैर. के विशेष इशारे मत करो। कोई-कोई मनुष्य तो अपना शरीर जैसे कमर वगैर. भी लचकाते हैं, यह बहुत ही बुरी आदत है।

(१९)

बहुत से लोग बातचीत करते समय अपनी आँखे मटकाते—चमकाते है। यह आदत ठीक नही समझी जाती। ऐसे लोग बदमाश, दुश्चरित्र समझे जाते है।

(२०)

जो मनुष्य जिस भाषा को नही समझता उसके आगे उस भाषा का बोलना ठीक नही। कुछ लोग अपनी शेखी दिखाने के लिए जान बूझ कर ऐसे शब्दो का प्रयोग करते है जिन्हे दूसरा समझ न सके।

(२१)

व्यभिचारियो से—(वह पुरुष हो वा स्त्री) आवश्यकता आ पड़ने पर भी बातचीत करना टाल दो। यदि अत्यन्त ही आवश्यकता आ पड़े तो डेढ़ (थोड़ी सी) बात करके अलग हट जाओ।

(२२)

यदि दो व्यक्ति आपस मे बात-चीत कर रहे हो तो आप बिना आज्ञा प्राप्त किये उनके पास मत जाओ। इतनी दूर खड़े रहो कि उनका भाषण आप न सुन सके और उनकी बाते सुनने के लिए ध्यान भी न दो।

(२३)

यदि सभा का सभापति चुना गया है तो जब कभी आप बोलें सभापति को सम्बोधन किये बिना तथा उसकी आज्ञा के बिना कुछ भी न कहे। क्योंकि उस समय सभापति वहाँ की बातो का उत्तरदाता है।

(२४)

यदि कोई व्याख्यान दे रहा हो और आपको उसके वक्तव्य के सम्बन्ध मे कुछ पूछना हो तो उसी समय बीच मे न बोल उठो बल्कि उसके चुप हो जाने पर नम्रतापूर्वक उससे आज्ञा ले कर देश कालानुसार बात-चीत करो।

(२५)

जहाँ कहीं किसी एक विषय पर चर्चा चल रही हो उसमें विषयांतर पैदा करनेवाली बात मत छेडो, न बात-चीत ही करने लगो।

(२६)

बहुत आहिस्ता और मन्द स्वर से भी मत बोलो जो लोगो को सुनाई न दे और लोग सुनते हुए उकताने लगे।

(२७)

इतना जल्दी मत बोलो जो सुननेवाले की समझ ही मे न आवे।

(२८)

किसी के जरा से उपकार—अहसान के बदले मे 'धन्यवाद' "साधुवाद 'शुक्रिया अदा करता हूँ' वगैर' वगैर वाक्य बोलो ।

(२९)

अपने मुँह अपनी तारीफ न करनी चाहिए, बल्कि काम ऐसे करने चाहिएँ जिनसे लोग खुद बखुद आप की तारीफ करने लगे ।

(३०)

किसी वाचनालय (लायब्रेरी) मे जा कर बात-चीत न करो और न जोर जोर से बोल कर ही पढ़ो ।

(३१)

बहुत से लोगो की आदत होती है कि बात को सुनने और समझने के बाद भी "ऐ ?" "क्या ?" आदि प्रश्नार्थक वाक्य बोल देते है । यह आदत ठीक नही है ।

(३२)

साधारण बात-चीत मे रुखाई, कठोरता, तानेबाजी, उद्दण्डता और शीघ्रता न होनी चाहिए । बात-चीत करते समय खूब चिल्ला-चिल्ला कर बोलना ठीक नही है ।

(३३)

जिससे पहले बात-चीत कर रहे हो, उससे पूरी तरह बात-चीत करके बीच मे दूसरे से बाते न करने लगना और फिर उससे बहुत देर तक न बोलना अनुचित है ।

(३४)

ऐसे वाक्य अथवा शब्द जिनका अर्थ उत्तम हो, किन्तु वे अशुभ समय ही बोले जाते हो उनका शुभ समय मे उच्चारण न

करना चाहिए। जैसे "राम नाम सत्य है" यह वाक्य अच्छा है किन्तु प्राय इसे मुर्दे को ले जाने के समय ही बोलते है, अतएव अशुभ माना जाता है। विवाह आदि शुभ कार्यो मे यह वाक्य बोलना बुरा माना जाता है।

(३५)

इधर की उधर कहने की आदत मत डालो। ऐसे आदमी कुछ दिनो बाद दोनो ओर के नही रहने पाते।

खान-पान ।

(१)

पानी खड़े खडे नहीं पीना चाहिए और पीते समय "डचक डचक" की आवाज कण्ठ से न होने देना चाहिए । बिना आवाज के भी पानी सुगमतापूर्वक पिया जा सकता है ।

(२)

नशा नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसके सेवन करनेवाले की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है । वेद कहता है —

"वि ते मदं मदावति शरमिव पातयामसि ।
प्र त्वा चरुमिव येषन्तं वचसा स्थापयामसि ॥ (अथर्व)

अर्थात् नशा कभी न करना चाहिए । यदि कुसंगति में फँस कर नशा कर भी लिया हो तो बेहोशी आने के पहले ही अपने घर में जा कर सो जाओ । सबसे उत्तम तो यही बात है कि नशे को अपना जानी दुश्मन समझो और उससे सदा बचते रहो ।

(३)

भोजन कर चुकने के बाद, हाथ वगैर इस प्रकार न धोओ कि भोजन के पात्र के बाहर छींटे उडे । और धो चुकने के बाद हाथ भी मत फटकारो ।

(४)

भोजन करते समय खूब मुख फाड़ फाड कर मुँह चलाना ठीक नहीं है । और न मुँह चलते समय ओठो और जबान का "चपल-चपल" शब्द ही होने दो ।

(५)

किसी वस्तु को खाते समय उतना ग्रास लो जितना कि मुँह मे समा सके। बडा ग्रास ले कर फिर दाँतो से काट लेना और शेष भाग का दूसरा ग्रास कर के खाना अनुचित है।

(६)

खाद्य पदार्थ के बहुत ही बड़े-बड़े या बिलकुल छोटे-छोटे ग्रास न करने चाहिए।

(७)

दाहिने हाथ से ही भोजन करना चाहिए, बाएं हाथ से कदापि न खाना चाहिए। धर्मशास्त्रो मे भी लिखा है कि—

"स्वाध्याये भोजने चैव दक्षिणं पाणिमुद्धरत्।"

(८)

भोजन करते समय व्यर्थ ही इधर-उधर की गप्पे मारना या अधिक बोलना ठीक नही है। बिलकुल चुप हो कर भी बैठ जाना और आवश्यकता आ पड़ने पर भी न बोलना अनुचित है।

(९)

भोजन करते वक्त पतले या चिकने पदार्थ में हाथ लतपत न करना चाहिए। और ध्यान रखना चाहिए कि कपड़ो पर टपके वगैर न गिरे। अँगुलियो को चाटकर साफ कर देना चाहिए।

(१०)

खाते समय या खाने के बाद, मूछे, होठ और दाढ़ी खाद्य वस्तु से लिपटी न हो इस बात का अच्छी तरह ध्यान रक्खो।

(११)

भोजन के पदार्थ को इस ढग से धीरे-धीरे और अच्छी तरह

उठाओ कि उसका जरासा भाग भी कपड़ो पर या शरीर पर गिरने न पावे। खास करके पतले पदार्थों को खाते समय विशेष ध्यान रक्खो।

(१२)

भोजन करते समय अच्छी बैठक हो, चित्त शान्त हो और मन प्रसन्न हो। भोजन करने का स्थान प्रकाशमय और सुगंधित हो।

(१३)

प्रेम द्वारा दिये गये किसी के भोजन को बुरा मत कहो। यदि वह पदार्थ की त्रुटि पूछने की बार बार इच्छा प्रकट करे तो ऐसे शब्दो मे कहो जो उसे कड़वे न मालूम हो।

(१४)

भोजन यदि दो चार या इससे अधिक मनुष्यो के साथ बैठ कर कर रहे हो तो इस बात का ध्यान रक्खो कि उनसे बहुत पूर्व या बहुत देर बाद खाना बन्द न हो।

(१५)

भोजन करने वालों की पक्ति मे से यदि कार्यवशात् उठना अत्यावश्यक हो तो पास के जीमते हुए महाशयों से आज्ञा ले कर उठना चाहिए।

(१६)

भोजन करते समय अपनी दृष्टि चंचल न रखकर अपने पात्र मे रक्खे हुए खाने के पदार्थों पर ही होनी चाहिए।

(१७)

खाद्य पदार्थ के न रहने पर यदि और खाने की इच्छा हो तो "लाओ लाओ" का हल्ला न मचाना चाहिए। बल्कि विनम्र और धीमे स्वर से मँगा लेना चाहिए।

(१८)

यदि आप किसी एक खाद्य पदार्थ की इच्छा प्रकट कर रहे हो, और वह उसे सुन कर दूसरा पदार्थ आपके सामने ला कर रखता हो तो उसे ही स्वीकार कर लो। और समझ लो कि जिस वस्तु की आप इच्छा करते थे, वह भंडार मे नही रही।

(१९)

भोजन के समय रंज पैदा करनेवाले और घृणा दिलाने वाले वाक्यो का प्रयोग भूल कर भी मत करो।

(२०)

पंक्ति मे भोजन करते समय ऐसे भद्दे शब्दो का प्रयोग नही करना चाहिए जिनसे कि दूसरे लोग खाने मे संकोच करने लगे। जैसे—"क्या मैं राक्षस हूँ, जो इतना खा जाऊँगा।" इत्यादि।

(२१)

यदि किसी वस्तु को एक आदमी बाँट रहा हो तो उससे मॉगना नही चाहिए; और न उस वस्तु की तरफ घूर घूर कर ही देखना चाहिए।

(२२)

भोजन-पंक्ति मे अन्य महाशयो से अधिक कोई चीज घर से लाकर या बाजार से मँगा कर बिना किसी जरूरी कारण के या पंक्ति मे बैठे महाशयो को बिना अनुमति के न खानी चाहिए।

(२३)

किसी के यहाँ भोजनार्थ—निमंत्रण मे जाने पर, वहॉ अपने घर से कोई चीज ले जा कर खाना उसका अपमान करना है, जिसके यहॉ आप भोजनार्थ गये हैं।

(२४)

भोजन के निमंत्रण मे अन्य महाशयो के विना निमत्रण के अपने छोटे-छोटे बच्चो को ले जाना उचित नही होता। हाँ, स्त्रियाँ ले जावें तो कोई हानि नहीं।

(२५)

तम्बाकू पीनेवाले मनुष्यो को, नही पीनेवाले तथा अपने पूज्य पुरुषो का ध्यान रखना चाहिए। ऐसे लोगों की ओर धुआँ भी न जाने देना चाहिए।

(२६)

अपने मान्य एवम् वयोवृद्ध पुरुषो को दिखाकर किसी प्रकार का मादक-द्रव्य सेवन मत करो।

(२७)

चलते-फिरते कुछ न कुछ खाते रहना ठीक नहीं। खाने की वस्तु को जेव मे भरकर खाने की आदत प्राय. वचपन से पड़ जाती है। इसलिए यदि वचपन के समय वालकों के जेवो में खाने की चीज माता-पिता प्रेम के कारण न भर दिया करें, और समझ-दार वच्चे स्वयम् ऐसी आदत न डालें तो वड़ा ही अच्छा हो।

(२८)

लेटे हुए पड़े-पड़े खाना सभ्यता के विरुद्ध है। इसलिए लेट कर न खाना चाहिए।

(२९)

द्वार मे वैठकर भोजन न करना चाहिए। प्राचीन पुरुषो ने भी इसे बुरा कहा है।

(३०)

भोजन की वस्तु को फेंक कर, भोजन करनेवाले मनुष्य के आगे कभी न डालना चाहिए। कई लोग रोटी, पूरी, लड्डू आदि पदार्थों को फेंक कर परोसते हैं, यह अनुचित है।

(३१)

खाने-पीने की चीजों को अपने खाने से पूर्व यदि हो सके तो वहाँ के उपस्थित लोगों को थोड़ा-बहुत दे कर उनका सत्कार करो। नहीं तो कम से कम वचनों द्वारा तो उनका सम्मान अवश्य ही कर दो।

(३२)

दिन भर पान मत चरते रहो। बहुत से लोग एक पान के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा, इस प्रकार दिन भर पचासों पान खा जाते हैं, यह ठीक नहीं है। यद्यपि पान खाना भारतीय सभ्यता है, तथापि रात-दिन खाते रहना ठीक नहीं।

(३३)

किसी दूसरे के घर जा कर किसी खाद्य-वस्तु को पाने की लालसा से घूर-घूर कर मत देखो।

(३४)

चारपाई पर बैठ कर या खाने की वस्तु को हथेली में रखकर अथवा भोजनपात्र को आसन पर रख कर भोजन मत करो। मनुजी भी आज्ञा देते हैं कि—

"शयनस्थो न भुंजीत न पाणिस्थं न चासने"

(३५)

हमारे देश में जूते पहने हुए खाना-पीना असभ्यता समझी गई है। स्मृतिकारों ने भी कहा है—

"सोपानहच्च यद्भुंक्ते तद्वै रक्षांसि भुञ्जते ।"

(३६)

चलते हुए, हाथ में हुक्का उठाये पीते हुए घूमना अनुचित है। कई लोग पाखाने में भी हुक्का पीते रहते हैं, यह बहुत बुरा है।

(३७)

तमाखू का खाना-पीना सभ्यता को लांछन लगाता है। खास करके चिलम पीना बहुत ही घृणित काम है। तमाखू खाने-पीने का निषेध धर्मशास्त्रों ने भी बड़े जोर के साथ किया है।

"तमाख भक्षितं येन सगच्छेन्नरकार्णवे ।"

(३८)

"न कुर्वीत वृथा चेष्टा न वार्यञ्जलिनापिबेत् ।
नोत्सगे भक्षयेद्भक्षान्न जातुस्यात्कुतूहली ।"

अर्थात्—व्यर्थ के कामों में हाथ मत डालो, अंजलियों से जल मत पीओ। खाने की वस्तु को गोदी में रख कर मत खाओ और न कभी विना प्रयोजन किसी के काम को देखने भालने की इच्छा करो।

(३९)

बहुत से लोग किसी प्रकार का नशा नहीं करते किन्तु होली के दिनों में वे अपने इस प्रण को शिथिल कर देते हैं और भंग माजूम—(माजून), भग की बनाई हुई मीठी फकी वगैर. सेवन करने लगते है, यह बात अच्छी नहीं है, क्योंकि नशे का किसी समय में भी किया जाना बुरी आदत है। चाहे फिर होली हो या दिवाली हो।

(४०)

खाने की वस्तुओं को, पीने के जल को और अग्नि को मत लाँघो।

(४१)

माँस कभी न खाना चाहिए, क्योंकि यह मनुष्य का भोजन नहीं है। परमात्मा ने माँसभोजी को माँस प्राप्त करने के लिए साधन दिये है, जैसे, तेज़ नाखून और पैने दाँत। मनुष्य के नाखून और दाँत शाकभोजी होने का प्रमाण देते हैं। ऐसे अनेक प्रमाणों द्वारा सिद्ध है कि मनुष्य की खुराक माँस कदापि नहीं है।

(४२)

प्याज, लहसुन आदि दुर्गंध-युक्त पदार्थों का सेवन न करो। क्योंकि इनके खाने से मुँह में बदबू आने लगती है। साथ ही ये तमोगुण प्रधान होने के कारण निषिद्ध हैं। मनुस्मृति में लिखा है.—

"लशुनं गृञ्जन चैव पलाण्डु कवकानि च।
अभक्ष्याणि द्विजातीनाममेध्यप्रभवाणि च॥"

(४३)

बाजार या गलियों में लोगों के सामने, खड़े हो कर बैठ कर या चलते हुए कोई चीज मत खाओ। बहुत से मनुष्य लोगों के सामने कुछ न कुछ चरते रहना अपनी प्रतिष्ठा समझते है, किन्तु यह भूल है। रातदिन खाना पशुओं का काम है।

(४४)

बाज़ार में मिठाई तथा चटपटी चीज़ों के दोने मत चाटो। इससे क्षुद्रता झलकती है।

(४५)

पीने से बचे हुए, पैर धोने से बचे हुए तथा सन्ध्योपासना से बचे हुए जल को फिर काम मे न लाना चाहिए।

"पाद-शेषं पीतशेषं सन्ध्याशेषं च यज्जलम्।
तज्जलं सुरया तुल्यं ग्राह्यं नैव कदाचन॥"

(४६)

भारतीय सभ्यता एक-साथ एक पात्र मे दो मनुष्यों को भोजन करने की आज्ञा नहीं देती, अर्थात् जूठन खाना निषिद्ध है। जूठन खाने से कई छूत बीमारियाँ जो हो अथवा होने वाली हो, एक दूसरे को सहज ही मे लग जाना संभव है।

(४७)

तम्बाकू वगैरः जीवन को नष्ट करनेवाले मादक द्रव्यो को स्वाद चखने तथा अनुभव प्राप्त करने के लिए भी मत ग्रहण करो। इस बात को सोलहो आने सच समझो कि तमाखू, चाय, भंग आदि मादक पदार्थों का सेवन बहुत ही बुरा है। यह सभ्यो के ग्रहण करने की वस्तु नही है। इनके लिए आयुर्वेद निषेध करता है, धर्मशास्त्र रोक रहा है, और खाने पीनेवाले लोग भी बुरा कहते हैं, इसलिए इन वस्तुओ को मत छुओ, ये विष से भी बुरी है। तम्बाकू से जहरीला काला साँप मर जाता है, चाय से खरगोश मर जाता है। अतएव इन असभ्यता की जड, मादक चीजो का सेवन कदापि न करो। जिस देश मे नशेबाजी अधिक है वह देश सभ्य नही माना जा सकता।

(४८)

थाली मे दाल, कढ़ी, या ऐसी ही दूसरे पतले पदार्थ होने

पर लोग उसे सारे पात्र मे न फैलने देने के लिए अपने पैर के अँगूठे के सहारे उस भोजनपात्र को रख लेते हैं, यह बहुत ही बेहूदापन है। भोजन को पैर न छुआना चाहिए।

(४९)

भोजन को पट्टे पर या चौकी पर रख के खाओ। कई लोग स्वयम् चौकी या पट्टे पर चढ़ बैठते हैं और भोजनपात्र पृथ्वी पर रख कर भोजन करते है, यह अनुचित है।

(५०)

खाने-पीने की चीजो के लिए लड़ाई-झगड़ा, मारकूट या आपस मे वादविवाद मत करो। यह बिलकुल ही संकीर्ण-हृदयता का सूचक है।

दूसरों के साथ व्यवहार

(१)

थूकते समय या कुल्ली करते समय हवा के चलने का रुख देखो; ऐसा न हो कि किसी मनुष्य पर जा गिरे।

(२)

घर का कचरा-कूड़ा, मिठाई आदि खाया हुआ जूठा दोना या कागज, फल की गुठली या छिलका अथवा अन्य किसी प्रकार की खराब वस्तु फेंकते समय इस बात का हमेशा ध्यान रक्खो कि किसी रास्ता चलते हुए मनुष्य पर न जा गिरे।

(३)

पानी वगैर डालते समय किसी पर उसके छींटे न जा गिरे, इस बात का हमेशा ख्याल रक्खो।

(४)

किसी से कोई वस्तु लेकर, मजाक मे भी उसे लौटाते समय फेंकना न चाहिए। इस तरह की ला परवाही से लोग असभ्य समझे जाते हैं। जिस तरह नम्रता दिखा कर उसे लिया था उसी भावना के साथ उसे लौटाओ। कई लोग पुस्तक को ले कर लौटाते समय फेंक देते हैं, यह ठीक नही है, क्योंकि इस तरह पुस्तक फट जाती है—जिल्द टूट जाती है।

(५)

किसी चीज को फेंक कर लौटाना, जिसे लौटाया जाता है उसके अपमान का सूचक है। अतएव भले ही कुछ कष्ट सहना

पड़े किन्तु ली हुई वस्तु को सभ्यतापूर्वक लौटाओ। बल्कि दोनों हाथों से दो। और उसकी कृपा के लिए उसे धन्यवाद दो।

(६)

जो वस्तु जिसे प्राप्त नहीं हो सकती हो, वह वस्तु उसे दिखा दिखा कर अपने काम में लाना असभ्यता है।

(७)

किसी आदमी के सामने निस्संकोच हो, शब्द करते हुए अपान-वायु (पादना) छोड़ना असभ्यता है। बहुत से बेहूदे लोग दूसरों की कुछ भी पर्वाह न करके धड़ाके के साथ पादते हैं, यह अच्छी बात नहीं है।

(८)

यदि कोई व्यक्ति छुप के पादना चाहता हो और उसका शब्द हो जाय तो, उस वक्त आने वाली हँसी को टाल जाओ।

(९)

यदि मुँह मे दातुन आदि के न करने से दुर्गन्ध आती हो तो किसी दूसरे के मुँह के पास मुँह मत ले जाओ। अपने मुख की बदबू आप को नहीं मालूम देती है। दाँतो को और मुँह को अच्छी तरह साफ न रखनेवाले और जर्दा, तमाखू, प्याज, लहसुन, मदिरा आदि के सेवन करनेवाले के मुँह से बदबू आती है।

(१०)

जिस किसी से, जिस समय मिलने जुलने के लिए कहो उससे ठीक समय पर मिलो। यदि कोई आवश्यक कार्य आ पड़े तो उस काम को भी छोड़ दो। जिससे मिलने का वादा किया है उससे एक क्षण ही मिल कर अपने आवश्यक कार्य के लिए

आज्ञा माँग लो, किन्तु अपने वचन को मत खोओ। अर्थात् समय का सम्मान करो।

(११)

किसी से मजदूरी के दिये पैसो से अधिक मेहनत लेने की इच्छा कदापि न करो।

(१२)

किसी दूसरे की वस्तु यदि अपने द्वारा बिगड़ जाय अथवा खो जाय तो उस वस्तु के मालिक की जैसे हो सके तैसे तुष्टि करो।

(१३)

मेले, बाजार अथवा मनुष्यो की भीड़ मे चलते समय यदि किसी को आप का धक्का लग जाय तो उससे उसी समय "मुआफ़ करना" "क्षमा कीजिए" इत्यादि वाक्य कह कर उसके मन को प्रसन्न कर दो।

(१४)

जो आदमी सो रहा हो, उससे किसी तरह की दिल्लगी या छेड़-छाड-मत करो, क्योकि वह वेसुध है।

(१५)

सोते हुए मनुष्य के पास इतने जोर से पैर पटक कर न चलो-फिरो जिससे उसकी नींद खुल जाय, बल्कि बहुत ही आहिस्ता आहिस्ता चलो। और न वहाँ शोर-गुल ही मचाओ। ध्यान रक्खो कि उसकी नीद मे आप के द्वारा विघ्न न हो।

(१६)

अगर कोई तुम्हे गाली दे रहा हो तो तुम भी उसे गाली न देने लगो। क्योकि गालियाँ देने वाला आदमी सभ्य-समाज मे

नीच व्यक्ति गिना जाता है। मुँह से गालियाँ निकालना ओछे और कमीन मनुष्यों का काम है।

(१७)

रेल आदि मे यात्रा करते समय केवल अपनी सुविधाओं का ही ध्यान मत रक्खो, बल्कि अपने पास बैठने वालो की तकलीफ और आराम का भी ख्याल रखो।

(१८)

रेल की खिडकी मे इस तरह से मत बैठो जिससे और लोगो को हवा मिलना कष्ट-साध्य हो। और न अपनी सुविधा के लिए जाड़े के मौसिम में बन्द की हुई खिड़कियो को खोल कर बाकी मुसाफिरो को कष्ट पहुँचाओ। अपने क्षणिक सुख के लिए और लोगों को कदापि कष्ट न पहुँचाओ।

(१९)

चलती हुई रेलगाडी मे से बाहर की ओर कुल्ली न करो, न नाक साफ करो और न थूको। क्योंकि रेल के चलने के कारण वायु की गति में विशेषता हो जाती है और उसकी फटकार के कारण डब्बो के अन्दर बैठे हुए यात्रियो पर पानी वगैर के छीटे जा गिरते हैं।

(२०)

रेल के डब्बे मे जब कि लोगो के बैठने के लिए जगह खाली हो तो अपने आराम के लिए दूसरों को आने से मत रोको, लडाई-झगड़ा मत करो, उनको आने दो, बल्कि उन्हे बैठने के लिए बुला लो।

(२१)

रेल के डब्बे मे बिना किसी कारण विशेष के बैठने के स्थान पर टाँगे फैला कर या अपना सामान फैला कर मत बैठो। यह ठीक नही है कि एक भाई तो खड़ा हो और तुम बैठने की जगह टाँगें फैलाये हो या अपना सामान रखे हुए बडे ही आराम से बैठे रहो। इसे अनधिकार चेष्टा कहते है।

(२२)

पान सुपारी या ऐसी ही कोई दूसरी चीज खाते समय बात-चीत मे किसी दूसरे पर थूक न पडने पावे, इस बात का ध्यान रखो और अपने वस्त्रो पर भी सुपारी या पान का रस मत गिरने दो।

(२३)

दूसरे का किया हुआ मजाक सहने की ताकत हो तो मज़ाक करो, वर्ना चुप रहो। मजाक प्राय चित्त की प्रसन्नता के लिए होता है, ऐसा हँसी मजाक भी किस काम का जिससे चित्त को दु.ख हो या कड़ाई हो जाय। रात दिन मजाक करते रहना भी ठीक नही है, क्योकि एक कहावत है—

"रोग का घर खाँसी—
और लडाई का घर हाँसी॥"

(२४)

विना आज्ञा प्राप्त किये किसी की सवारी, पलङ्ग और आसन पर मत बैठो।

(२५)

जिससे जिस बात के लिए जितने पैसे ठहरा लिये हो उसे

उतने ही दो। उसमें से एक फूटी कौडी भी कम देने की इच्छा तक न करो।

(२६)

धोबी, चमार, मेहतर, कुम्हार, भाट, कापड़ी, राय, नाई आदि मनुष्यों की मजदूरी के दाम पूरे और प्रसन्नतापूर्वक दो। इन लोगों की प्रसन्नता से कीर्त्ति और नाराजी से अपकीर्त्ति होने में देर नहीं लगती।

(२७)

किसी के सर के बाल मत खींचो और न सर मे मारो ही। प्राय ऐसा देखा जाता है कि जब कभी कोई सर के बाल उस्तरे से साफ कराता है तो उसके मित्रवर्ग उसकी घुटी खोपड़ी मे चपतें मारते है, यह ठीक नहीं है। मनु ने भी इन्कार किया है—

"केशग्रहान्प्रहाराश्च शिरस्येतान्विवर्जयेत्।"

(२८)

किसी की पगडी, टोपी या साफे के गिर जाने पर मत हँसो। बल्कि उस वक्त गभीरता धारण करो। और हो सके तो उस ओर से दृष्टि हटा कर देखा न देखा कर दो।

(२९)

जिसके पास जो वस्तु न हो, अथवा होने पर भी जिसके पाने की आशा बहुत कम हो ऐसी वस्तु किसी से देने के लिए न कहो।

(३०)

यदि कोई अनजान भी, जिससे आप का कुछ भी सम्बन्ध न हो, आपत्तिवश या असमर्थता के कारण किसी काम को न कर

सकता हो, और वह कार्य उचित हो तथा आप की अंतरात्मा की प्रथम ध्वनि उसे करने की आज्ञा देती हो, तो अवश्य करो।

(३१)

नाई लोग प्राय. हजामत बनाते समय चोटी, मूँछ, नाक तथा मुँह को खाल को खूब जोर से खींच तान कर बनाते हैं। ऐसे नाई असभ्य और गँवार कहे जाते है।

(३२)

जिस किसी ने अपने साथ कभी भी उपकार किया हो उसके उपकार का बदला, समय पाते ही, अवश्य चुका दो।

(३३)

किसी के गुप्त कार्य अथवा बात को यदि आप जानते हैं तो बिना किसी प्रबल कारण के क्रोध मे अथवा अविचार के कारण प्रकट न करो।

(३४)

यदि आप ठाले हो तो किसी अपने मित्र के यहाँ जाकर उसके काम मे विघ्न मत डालो। यदि आप का मित्र लिहाज के कारण आप से कुछ न कहता हो तो आप उसके समय का ध्यान रखो। अपनी व्यर्थ की बातो मे उसका अमूल्य समय बरबाद मत करो।

(३५)

किसी को अचानक चमकाने का प्रयत्न मत करो। कभी कभी इसका ऐसा भयकर परिणाम होता है, जिसका कि चमकाने वाले को स्वप्न मे भी ध्यान नही था।

(३६)

यदि भूल से किसी की कोई वस्तु आप के पास आ गई हो तो तुरन्त उसे उसकी चीज लौटा दो। स्मरण रहे कि कभी-कभी परीक्षा के लिए भी लोग अधिक वस्तु दे देते हैं।

(३७)

किसी की दैनिक दिनचर्या जो उसने अपनी नोट बुक या डायरी में लिखी हो उसके जीवित रहते अथवा बिना उसकी आज्ञा के कदापि मत देखो।

(३८)

किसी के जेब में से दिखता हुआ रूमाल, पेन्सिल, कागज या पुस्तक वगैर न खींचो।

(३९)

यदि किसी की भूल से अपना थोड़ा बहुत नुकसान हो गया हो तो जान बूझकर उसी समय उसका नुकसान करने का इरादा मत करो।

(४०)

पान वगैर. में दिलग्गी के लिए कोई खराब वस्तु रखकर किसी को मत खिलाओ। कई लोग मुँह काला करने के लिए पान मे हीरा-कसीस वगैर' रखकर खिला देते हैं—यह अनुचित है।

(४१)

तोतले या अटक-अटक कर बोलनेवाले की नकल मत करो क्योंकि यह उसके वश की बात नहीं है—यह तो ईश्वर की लीला है। उसका उपहास नहीं बल्कि उसके बनानेवाले परमात्मा का उपहास है।

(४२)

लँगड़े, लूले, काने, अन्धे और इसी तरह के अंगहीन दीन मनुष्यो की नकल मत करो—उन्हे न चिढ़ाओ। क्योकि अंग-भंग होते देर नही लगती। ईश्वर न करे आप भी वैसे हो जावे तब लोग आप को चिढ़ाने लगेंगे।

(४३)

किसी की वस्तु को लालचवश अपने लिए मत उठाओ। कभी-कभी कई लोग किसी मनुष्य की आदत देखने के लिए भी कुछ वस्तु रख देते हैं और इसी पर से उसकी ईमानदार और बेइमान तबियत का पता लेते है।

(४४)

हँसी-मजाक मे भी किसी की वस्तु को उसके मालिक की गैरहाजिरी मे मत उठाओ, न छुपाओ। यह कभी-कभी चोरी की मियाद तक पहुँच जाता है।

(४५)

विना आज्ञा प्राप्त किये किसी की वस्तु को मत उठाओ। इस वात का ध्यान खूब अच्छी तरह प्रकार रखना चाहिए।

(४६)

होली के दिनो मे कुछ लोग आलू, गाजर, शलगम, लकड़ी, वगैर: मे गालियाँ खोद कर मुहर वना लेते हैं और आनेजाने वालो के वस्त्रो पर रंग लगाकर छापे देते है, यह अनुचित है, कमीनापन है।

(४७)

जो लोग होली के उत्सव को नही मानते है उन लोगो पर रग पानी, गुलाल आदि वस्तुये विना उनकी इजाज़त के मत डालो।

(४८)

होली नामक हिन्दू त्योहार के दिनो मे गोवर, कीचड़ मूत्र मलादि गन्दी वस्तुये मत फेको। वल्कि अवीर, गुलाल, रंग, केसर, अरगंजा, गुलाबजल, इत्र आदि से लोगोंका सत्कार करो।

(४९)

जिसका अपराध हो, उसे ही उसके विपय मे जो कुछ भला वुरा कहना हो कहो। व्यर्थ ही किसीका दोष किसी और के माथे मढ़ना ठीक नहीं।

(५०)

जो वस्तु जिससे लो वह उसे ही लौटाओ, अर्थात् विना वस्तु के सच्चे अधिकारी की आज्ञा प्राप्त किये किसी दूसरे को मत दो।

(५१)

किसी की वस्तु को ले कर हज़म न कर जाओ। क्योंकि आपका उसपर कुछ भी अधिकार नहीं है।

(५२)

जिस किसी से जितने दिन के लिए जिस शर्त पर कोई वस्तु ऋण लो, उसे उतने ही दिन मे शर्त के अनुसार जैसे वने तैसे लौटा दो।

(५३)

जो आपको माँगी हुई वस्तु दे देता है, उसे उसके माँगने पर किसी देय (देने योग्य) वस्तु के लिए आप इन्कार मत करो—जी मत चुराओ।

(५४)

प्रत्येक देश की सभ्यता मे थोड़ा-वहुत भेद अवश्य है, इस-

लिए विदेशी आदमियो के साथ बहुत ही सावधानी से सँभल कर बर्ताव करो। ऐसा न हो, कही आप उनकी दृष्टि मे असभ्य ठहर जायँ।

(५५)

भयकर प्राणियों के मृत शरीर को किसी मनुष्य पर फेंक कर मत चमकाओ। सर्प, बिच्छू आदि को फेक कर लोग दूसरो को चमकाने मे बहादुरी समझते है, किन्तु यह अनुचित है।

(५६)

अपने पास सोनेवाले पर निद्रावस्था मे अपनी टांगे और हाथ न पटको।

(५७)

माँगी हुई पुस्तक के खो जाने पर या खराब हो जाने पर उसके मालिक को उसके बदले नई पुस्तक मँगा कर दो। क्योंकि उसने आपको पढ़ने के लिए दी थी, न कि खोने या खराब करने के लिए।

(५८)

यदि किसी को बुलाना हो तो सम्मान-सूचक शब्दो से उसके नाम को उच्चारण करो। दो या तीन बार से अधिक पुकारते ही न रहो।

(५९)

द्वार के छिद्रो मे से अकारण ही आँखे लगाकर किसी अन्य महाशय के घर मे अन्दर की ओर देखना अनुचित है।

(६०)

किसी को कुछ दे कर अपना एहसान मत जनाओ और न उसका बदला पाने की आशा ही करो। किसी के साथ सुव्यव-

द्वार कर के उसे कहते फिरना स्वभाव का ओछापन प्रकट करता है। सभी शास्त्रों मे देने के बाद उसे कहने पर उसका फल कम हो जाने का विधान है।

(६१)

यदि कोई अपने घर आया हो तो, आपको उसके पास उपस्थित रहना चाहिए। यदि आपको उसी समय कोई आवश्यक कार्य हो तो उसके लिए आगन्तुक महाशय से आज्ञा प्राप्त करो।

(६२)

किसी के बगल मे, कोख मे या अन्य अंग के भागो मे गुदगुदाना, और खासकर अन्य लोगो के सामने, ठीक नहीं है।

(६३)

जिससे एक बार मित्रता कर ली हो, उससे फिर यथासभव वैर मत करो। यदि किसी कारणवश मनोमालिन्य हो भी जाय तो मन मे ही रखो और दूसरे लोगो पर प्रकट मत होने दो।

(६४)

किसी की वस्तु को छिपा कर उसके बदले मे मिठाई वगैरः खाने की या पैसे लेने की चेष्टा करना अनुचित है।

(६५)

अपने घर आये भिक्षुओ को यदि कुछ नही देना है तो उन्हे झिडको मत, वल्कि समझा कर प्रेमपूर्वक हटा दो।

(६६)

विद्यार्थियो को चाहिए कि अपने सहपाठियो से लड़ाई न करे, वल्कि प्रेम के साथ रहे। सब के साथ भाई-बहन का सा व्यवहार करें—

"हिलि मिलि के निज गृह बसे, पंछिहु निपट अजान।
कछु लज्जा है वा नाहीं, बालक चतुर सुजान॥"

(६७)

अपने मैले हाथों को किसी दूसरे के वस्त्रों से चुपचाप पोंछने का विचार मत करो।

(६८)

किसी के गले में पड़ी हुई जनेऊ अथवा अन्य धार्मिक चिह्न जैसे गंडे तावीज आदि को मत छुओ और न खींचो।

(६९)

किसी की मिहनत का बदला दिये बिना न रहो। यदि वह उस समय उसके बदले में लेने से इन्कार करे, तो फिर कभी किसी दूसरे बहाने से उसकी मिहनत का मेहनताना चुका दो।

(७०)

हिन्दुओं को प्राय रसोई घर में जा कर ही चौके में भोजन करना पडता है क्योंकि सखरी निखरी का ख्याल होता है। जब कि भोजन कर रहे हो और इत्तिफ़ाक से रसोई बनानेवाला भोजन बना चुका हो तो उसे चाहिए कि चूल्हे में जलती हुई लकडियों को निकालकर पानी डालकर उसी समय न बुझावे; क्योंकि रसोई जीमनेवाले के आँख, नाक में धूआँ घुस जाता है, जिससे उसे बडा कष्ट होता है।

(७१)

वी० पी० मँगाकर लौटा देना अनुचित है। यदि लौटाना ही है तो मत मँगाओ। पहले ही विचार लो, बाद में वी० पी० मँगाने का आर्डर दो। इस तरह से विश्वास जाता है। साथ ही

आप का तो खेल हो जाता है और दूकानदार का खर्च पेकिंग मेहनत वगैर वर्बाद हो जाता है।

(७२)

किसी के लाड़ में रक्खे हुए घरू नामो को आप मत उच्चारण करो। क्योंकि प्यार का नाम उसी व्यक्ति के मुँह से बोला जाना चाहिए जिसने कि रक्खा हो।

(७३)

वहुत से लोग किसी कम्पनी से कोई वस्तु वी० पी० पार्सल द्वारा मँगाते हैं और यदि वह उनके मन लायक न हुई तो फिर किसी फर्जी नाम से एक पोस्टकार्ड डाल कर उसके यहाँ से कोई दूसरा वी पी० मँगाते हैं। अन्त मे उस नाम के मनुष्य का पता न लगने के कारण वी० पी० पार्सल दो चार दिन डाकखाने की हवा खा कर लौट जाता है। इससे उनको नुकसान हो जाता है। ऐसा व्यवहार न करना चाहिए, क्योंकि इससे कोई लाभ नहीं।

(७४)

देखने के लिए किसी के सिर पर से पगड़ी, टोपी या साफा खुद अपने हाथों से न उतारो, वल्कि उससे माँग लो।

(७५)

यदि आपने किसी की कहीं पर निन्दा सुनी हो तो उस निन्दाजनक वात को उसे एकान्त में कहो—लोगो के सामने कदापि भूल कर न कहो।

(७६)

यदि किसी ने आप से कोई गुप्त वात रखने के लिए कही हो तो उसे गुप्त ही रखो और भूलकर भी किसी पर प्रकट न करो।

(७७)

जबानी बातो का उत्तर जबान से ही दो और लिखित बातो का उत्तर लिख कर ही दो । लिखे हुए का जबान से और जबानी का लिख कर बिना किसी कारण विशेष के जवाब मत दो । खास कर वादविवाद के समय इस बात का बहुत ही ध्यान रखना चाहिए।

(७८)

किसी प्रिय वस्तु को देख कर उसे अकारण ही माँगने मत लग जाओ । क्योकि शायद वह उसके न देने की हुई तो आपके माँगने के कारण उसे कष्ट होगा और यदि उसने नही दी तो आपके चित्त को दु.ख होगा ।

(७९)

किसी के साथ-साथ चलते समय दूसरे के चलने की सुविधा का ध्यान रखो । कधे से कंधा अड़ा कर चलना तथा अपनी चाल को उसकी तरफ दबा कर उसको एक तरफ घुसेड देना या रास्ते से हटा देना अनुचित है । यह एक आदत सी पड़ जाती है । अतएव इस आदत को छोड़ दो ।

(८०)

दूसरो की वस्तु को विना उसकी आज्ञा प्राप्त किये अपने काम मे मत लाओ । खास करके मशीनरी और शौक के लिए रखी हुई हार्मोनियम, फोनोग्राफ, बाँसुरीआदि वाद्य भूल कर भी न काम मे लाओ । दूसरो के शस्त्रो को भी विना आज्ञा न उठाओ ।

आदर-सत्कार ।

(१)

ओहदे मे वडे, उम्र मे वडे, मान मे वडे, विद्या मे वडे और वर्ण मे वड़े मनुष्यो को सदा पूज्य और अपना मान्य समझो। उनके प्रति आदर-प्रदर्शक व्यवहार करना चाहिए।

(२)

अपने पूज्य और गुरुजनो को, जव कभी वे तुम्हे मिले, प्रणाम अवश्य करो। उन्हे देख कर मुहँ छुपाना या आँखे वचा जाना ठीक नहीं है।

(३)

प्रणाम करने का ढंग लापरवाही लिये न होना चाहिए। प्रणाम करते समय श्रद्धा, भक्ति, और प्रेम उनके साथ अवश्य ही दिखाना चाहिए। महर्षि मनु कहते हैं—

"अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविन'।
चत्वारो तस्य वर्द्धन्ते आयु कीर्तिर्यशोवलम् ॥"

(४)

अपने पूज्य पुरुषो के सामने पैर पर पैर रख कर मत वैठो, और न उनसे उच्च आसन पर ही वैठो।

(५)

जव कोई पूज्य पुरुष अपने यहाँ आवे तो उसे उठकर मान दो और यदि आप स्वयम किसी उच्च आसन पर वैठे हो तो उस पर विठाकर खुद किसी नीचे दर्जे के आसन पर वैठो। और इसी

प्रकार उसके जाते समय भी, थोड़ी दूर उसके साथ चलकर, शिष्ट शब्दो मे उसका सत्कार करना चाहिए। धर्म-शास्त्र भी कहता है—

"अभिवादयेद्धि वृद्धांश्च दद्याच्चैवासनं स्वकम्।
कृताञ्जलिरुपासीत गच्छत पृष्ठतोऽन्वियान्॥"

(६)

किसी मनुष्य के अपने घर आने पर. "आइए, पधारिए, शोभा बढ़ाइए, गृह पवित्र कीजिए, विराजिए" आदि प्रेम-भरे शब्दो से नम्रता दिखाते हुए, उनका हर्षपूर्वक स्वागत करना चाहिए।

(७)

अपने घर पर आये हुए मनुष्य की इच्छा देख कर, "कैसे कृपा की? कैसे कष्ट किया? किधर रास्ता भूल गये? क्या आज्ञा है?" इत्यादि प्रेम-पूर्ण शिष्ट वाक्यो को बोल कर उसके आने का कारण पूछो। बाद मे नम्रतापूर्वक उससे बातचीत करो।

(८)

अपने घर पर आये हुए का, यदि वह आपका शत्रु भी है तो भी, अनादर मत करो। शत्रु का प्रेम-पूर्वक आदर ही आप के विशाल हृदय का द्योतक होगा। घर आये शत्रु से भी वैसा ही व्यवहार करो जैसा कि आप सर्वसाधारण से करते हैं।

(९)

यदि किसी का अपने ऊपर थोडा सा भी अहसान हो तो "मैं आप का आभारी हूँ, बड़ी कृपा की, मै आप को धन्यवाद देता हूँ, साधुवाद" आदि शब्दों द्वारा कृतज्ञता प्रकट करो।

(१०)

अपने पूज्य जनो को आते देखकर उनका स्वागत करने के लिए कुछ आगे चल कर उनसे प्रणाम, अभिवादन करो।

(११)

मान्य पुरुषों के बराबर चलने या बैठने का विचार मन में मत लाओ। हाँ, ऐसे काम करो जिससे लोग स्वयम् आपका सम्मान करें। कई लोग न कुछ होते हुए भी अपने से मान्य पुरुष के बराबर बैठने या चलने में अपना गौरव समझते हैं— यह असभ्यता है। ऐसे लोग गँवार गिने जाते हैं।

(१२)

मुसाफिरी में, यान में, वाहन पर, अथवा आपत्काल में मान्य पुरुषों के साथ चलना फिरना अथवा उठना बैठना पड़े तो कोई हानि नहीं।

(१३)

अपने घर पर आये हुए व्यक्ति का जल, अन्न, पान-सुपारी इत्र आदि स्वागतोपयोगी द्रव्यों द्वारा स्वागत करो। भारतीय सभ्यता में आतिथ्य का सब से ऊँचा पद है।

(१४)

यदि किसी मनुष्य को योगात् तुम्हारा पैर छू जावे तो उससे, हाथ जोड कर अपनी इस गलती के लिए क्षमा माँगो। अथवा शरीर के जिस भाग को पाँव लगा हो उसी भाग को अपने दाहिने हाथ से स्पर्श करके अपने हाथ को मस्तक से लगाओ।

(१५)

जिनसे आप का दिल्लगी–मज़ाक का कुछ सम्बन्ध हो, उन्हीं-से मर्यादापूर्वक हँसी–दिल्लगी करो। ऐसे व्यक्ति से जिससे आपने कभी हँसी-मजाक न किया हो, मत करो और न अपने पूज्य विद्यावृद्ध, वयोवृद्ध पदवृद्ध और वर्णवृद्ध मनुष्यों से ही दिल्लगी करो।

(१६)

यदि अपने घर आये हुए महाशय का आतिथ्य पान-सुपारी आदि मे करना है, तो या तो उसके आते ही करो अथवा उसके जाने के समय करो।

(१७)

सत्कार के लिए दी जानेवाली वस्तु को खुद अपने हाथो से किसी को उठाकर न दो, बल्कि उसके आगे कर दो वह स्वयम् ले लेगा।

(१८)

यदि कोई सत्कार के लिए पान, सुपारी, लौंग, इलायची, इत्र वगैर दे तो उसे धन्यवादपूर्वक स्वीकार करो। ले चुकने पर या लेने के पूर्व दाता को हाथ जोड़कर प्रणाम करो। यदि किसी वस्तु को आप नही खाते पीते हो तो उसे लेकर अपने पास रक्खो। जैसे यदि सुपारी आप नही खाते हो तो—सुपारी अत्यल्प मात्रा मे ले लो और अपने पास रख लो अथवा दूसरे को दे दो। किन्तु लेने से स्पष्ट इन्कार मत करो। हॉ, मादक पदार्थों के लिए आप स्पष्ट इन्कार कर दो।

(१९)

यदि तुम्हारे आगे कोई सत्कार-प्रदर्शनार्थ वस्तु आवे तो उसे अधिक रूप में लेने की इच्छा न करो, बल्कि इस बात का ध्यान रखते हुए बिलकुल ही थोड़ी लो कि वह वहाँ के उपस्थित सभी महाशयो को बराबर मिल सके।

(२०)

सभा मे, नीचे पडी हुई सुपारी लौंग इलायची आदि वस्तुओं को बीन कर मत खाओ।

(२१)

अगर जाते ही गृह-स्वामी ने आपको पान-सुपारी नहीं दी हो और कुछ देर बैठने के बाद दी तो उस आतिथ्य को स्वीकार करके फिर वहाँ से चल देना ही ठीक है।

(२२)

यदि आप मादक द्रव्य सेवन करते हो तो अपने घर आये हुए सज्जन को उसको सेवन करने के लिए विवश करना बेहूदापन है।

(२३)

यदि कोई महाशय आपके यहाँ आवे और आप किसी कारण-वश उनके पास नहीं बैठ सकते हो और वह नहीं उठना चाहते हों तो उन्हें कुछ भी न कहकर पान-सुपारी दे दो। यदि वह समझदार होगा तो समझ जावेगा और उठकर चल देगा।

(२४)

"आज्ञा हो" "इजाजत दीजिए" "आपका बहुत सा अमूल्य समय नष्ट किया" आदि मानसूचक वाक्यों को बोल कर ही किसी मनुष्य से पृथक् हो—विदा लो।

(२५)

किसी के पहनने के वस्त्रों को और खासकर सिर पर धारण करने के वस्त्रों को पैर से न छुओ। यदि भूल से पैर छू भी जावे तो अपनी भूल स्वीकार करने के लिए उसे उठा कर अपने सिर को लगाओ।

(२६)

अपने वयोवृद्ध, पूज्य जैसे पिता, गुरु, बड़ा भाई आदि के वस्त्रों को न पहनो। खास कर सिर पर धारण करने के वस्त्रों का

अधिक ध्यान रखो। इनके जूते और खड़ाऊँ भी मत पहनो। और न इनके बैठने के आसन पर ही बैठो।

(२७)

किसी वस्तु को लेने के समय, जब कि देनेवाला सत्कार रूप मे आपकी सेवा कर रहा हो तो, आप अपने वयोवृद्ध अथवा पूज्य पुरुषो को, यदि उपस्थित हो तो देने या दिलाने के बाद खुद ग्रहण करो।

(२८)

यदि आप चारपाई पर बैठे अथवा लेटे है तो अपने से मिलने के लिए आये हुए महाशय को अपनी चारपाई के सिराहने की ओर बिठाओ और आप स्वयम् पैताने की तरफ बैठो।

(२९)

यदि आप बीमार नही है और लेटे हुए है, और उस समय यदि कोई आदमी आप से मिलने आता है तो उठ बैठो। पड़े मत रहो।

(३०)

अपने पूज्य या मुखिया व्यक्ति के खड़े होने पर सब लोगो को जो वहाँ मौजूद हो, खड़े हो जाना चाहिए। और उसके बैठने के बाद अथवा चले जाने के बाद बैठना चाहिए। व्याख्यान आदि के समय ऐसा नही करना चाहिए।

(३१)

परदेश जाते समय, दूसरे ग्राम को जाते समय, विदेश अथवा अन्य गॉव से लौट कर आने के समय और किसी सस्कार-विशेष के समय अपने पूज्यो के पैरो को छू कर आशीर्वाद प्राप्त करो।

(३२)

गुरुजनो के चरण स्पर्श करते समय दाहिने हाथ से दाहिना और बाएँ हाथ से बायाँ पैर छुओ ।

"व्यतस्त पाणिना कार्यमुपसंग्रहण गुरो ।
सव्येन सव्य. स्प्रष्टव्यो दक्षिणेन च दक्षिण. ॥"

(३३)

माता, पिता, गुरु और पूज्य पुरुपो के चरणो का नित्य प्रातः काल श्रद्धा भक्ति पूर्वक स्पर्श करना चाहिए । बराबर वालो से यथायोग्य प्रणामाभिवादन कर लेना चाहिए ।

(३४)

अपने पूज्य और गुरुजनो से क्रोध मे भी कटु भापण न करो, बल्कि सदा विनीत भाव से रहो । उनके साथ लडाई झगड़ा और वितण्डावाद न करो । जो लोग अपने मान्य पुरुपो पर क्रुद्ध होते है अथवा उनके प्रति अपमान-सूचक शब्द प्रयोग करते हैं, वे अत्यन्त नीचाशय व्यक्ति होते है ।

(३५)

यदि कोई सत्कार प्रदर्शनार्थ आपको किसी वस्तु के लेने को कहे तो चटपट उसे लेने को उतारू मत हो जाओ । पहिले उसे लेने से इन्कार करो और यदि अत्यन्त आग्रह ही हो तो थोड़ी बहुत ले कर उसके चित्त को प्रसन्न कर दो ।

(३६)

किसी को देखकर प्रणाम करने के लिए हाथ उठाकर मुख आदि अग खुजलाने न लगो । यदि किसी अंग पर खुजाल भी चले और ऐसा करने से सामने वाले को प्रणाम् का धोका हो

जाने की संभावना हो तो मत खुजलाओ। उसके हट जाने पर, या तरकीब से खुजलाना चाहिए।

(३७)

जिसको नित्य प्रणाम करते हो, उससे कभी प्रणाम करना और कभी न करना यह बहुत ही अनुचित बात है।

(३८)

जिस प्रकार अन्यान्य देश की जातियो मे प्रणाम के लिए शब्द-विशेष मुकर्रर हैं, उस तरह भारत मे और खास कर हिन्दू जाति मे कोई प्रणाम का तरीका या वाक्य निश्चित नहीं है। ऐसी दशा मे प्रणाम के लिए एक वाक्य-विशेष को निश्चित कर देना सहज बात नहीं है। इसलिए प्रणाम करने के समय उत्तम अर्थ-युक्त मधुर और ऐसे सुन्दर वाक्य का ही प्रयोग करो जिसमे नमन का अर्थ अवश्य हो। मेरे विचार से किसी महापुरुष के नाम के साथ "जय" शब्द बोल देने से प्रणाम सूचित नही होता। आजकल लोग प्रणाम के समय "जय जय" इतना ही बोलते है। यह प्रणाम का ढग निरर्थक और बुद्धि-शून्य है।

(३९)

जिसे आप प्रणाम करना चाहते हो, और यदि उसके आगे अर्थात् आपके और उसके मध्य मे कोई व्यक्ति हो और उसकी दृष्टि भी आप पर ही हो तो ऐसी दशा मे, उसके हट जाने पर अथवा ऐसा मौका देखकर कि, वह बीच का मनुष्य अपने लिए प्रणाम न समझे, प्रणाम करो।

(४०)

जो उम्र मे, पद मे, प्रतिष्ठा मे, बुद्धि मे अथवा कार्य मे अपने

समान हो, और आपस मे प्रणाम का व्यवहार चालू हो तो सदा उसी के द्वारा पहिले प्रणाम की आशा न करो। बल्कि उसके पहिले आप उससे प्रणाम करने का ध्यान रखो।

(४१)

विना किसी कारण-विशेष के दूर से ही चिल्लाकर प्रणाम न करो। यह प्रणाम नहीं वल्कि प्रणाम की लकीर पीटने के लिए वेगार टालना है।

(४२)

यदि कोई मुख से कुछ वाक्य विशेष बोल कर प्रणाम करता है तो उसका उत्तर आप भी मुहँ से ही दो। चुप्पी न साध जाओ।

(४३)

प्रणाम करने का भारतीय ढंग दोनो हाथ जोडने का है। अतएव जब किसी को प्रणाम करो तब उसके सामने दोनों हाथ जोडो। सिर को एक हाथ लगाकर प्रणाम करने का ढग विदेशी है—भारतीय नहीं।

(४४)

अपना पूज्य अथवा वयोवृद्ध यदि कारण विशेष से आपका सम्मान करने के लिए प्रणाम करे तो इस बात का ध्यान रखो कि उन्हें आप से पहिले प्रणाम करने का मौका ही न मिले। वे प्रणाम करें उसके पूर्व आपको प्रणाम कर लेना चाहिए।

(४५)

किसी उत्सव, समाज या सभा मे पहुँच कर वहाँ के उपस्थित महाशयो को प्रणाम अवश्य करो।

(४६)

बहुत दिनो मे मिलनेवाले अपने प्रेमी से हाथ मिलाना चाहिए। लोगो का ऐसा ख्याल है कि हाथ मिलाना पाश्चात्य सभ्यता है। किन्तु यह भारत की प्राचीन सभ्यता है—इसका जिक्र महाभारत नामक ग्रन्थ मे है। बराबर वाले को अथवा अपने से छोटी उम्र वाले के लिए ही आलिंगन उत्तम है।

(४७)

अतिथि सत्कार के समय निम्न बातो का ध्यान रखो। भारत की यह बहुत पुरानी सभ्यता है। लोगो ने इसे भुला दिया है और केवल देव-प्रतिमाओ के पूजन मे लगा दी है—

आवाहन—आगन्तुक महाशय को आइए, पधारिए आदि कह कर स्वागत करना।

आसन—बाद मे बैठने के लिए उत्तम आसन देना। पश्चात्—

पाद्य, अर्घ्य—पैर धोने के लिए उत्तम जल देना तथा खुद अपने हाथो से धोना।

आचमन—बाद मे कुछ पेय पदार्थ दुग्ध जलादि देना।

स्नान—स्नान करवाना।

वस्त्र—धोती वगैरः वस्त्र बाँधने को देना।

यज्ञोपवीत—बाद मे नवीन जनेऊ पहिनने के लिए देना।

चंदन—सुगन्धित द्रव्य चंदनादि लेपन करना।

अक्षत—खूबसूरती के लिए गन्ध मे चावल वगैर. चिपकाना।

पुष्प—फूल मालाएँ पहनाना।

धूप—अतिथि की प्रसन्नता सम्पादन के लिए सुगन्धित द्रव्य जलाना।

दीप—यदि संध्या समय है, तो दीपक जलाना क्योकि—

नैवेद्य—भोजन कराना है॥

ताम्बूल—पान का बीड़ा देना।

यह षोडशोपचार नाम से प्रसिद्ध विधि भारत के आतिथ्य की अत्यन्त प्राचीन प्रथा है।

(४८)

आपके घर आ कर भोजन करनेवाले महाशय को उसके जूठे पात्र मत उठाने दो। या तो आप खुद उठाओ अन्यथा दूसरा प्रबन्ध करो। मान लो कि अतिथि क्षत्रिय है और आप ब्राह्मण हैं, तो भी आप उससे जूठे पात्र न उठवाओ और न मँजवाओ। अतिथि के जूठे पात्र उठाने मे धर्म नहीं घटता है। यदि आप उठाना ठीक समझते ही नही तो किसी दूसरे से उठवा दो, परन्तु उसे न उठाने और न माँजने दो।

(४९)

अपने जूठे पात्र, पत्ते, दोने, फलो के छिलके और गुठली वगैर. जहाँ तक हो सके अपने पूज्य, वयोवृद्ध और वर्ण तथा विद्या मे उच्च मनुष्य से उठवाने का विचार मत करो। जब तक कि कोई खास प्रबन्ध न किया गया हो तब तक अपना जूठा अपने हाथो ही फेको और पात्रो को स्वयं माँजो।

(५०)

अंग्रेजी सभ्यता टोपी उतार कर इज्जत करना सिखाती है

किन्तु भारतीय सभ्यता पैरों से जूतियाँ निकाल कर सम्मान करने की आज्ञा देती है। अतएव आदर देने के समय यदि उचित समझो तो जूते निकाल दो। जैसे—पवित्र स्थान में, पवित्र कार्य में, महात्मा पुरुषों के संग और पूज्य पुरुषों को प्रणाम करने के समय।

(५१)

अपने घर आये हुए व्यक्ति से जरूर बोलो, यदि बोलने के लिए कोई बात न हो तो कुशल समाचार तथा उसके आने का कारण ही पूछो। जल, भोजन आदि के विषय में पूछो। कहीं ऐसा न हो कि आप उससे बोले ही नहीं और वह बुरा मानकर चला जाय।

(५२)

जब किसी को प्रणाम करो तो इस बात का ध्यान रखो कि हाथ में कोई भद्दी वस्तु न हो, जैसे वुहारी (झाड़ू) डंडा वगैरह। यदि डंडा हो तो प्रणाम के समय नीचे की ओर लटकता रहे, कहीं ऊपर की ओर न उठ जावे इस बात का ध्यान रखो।

(५३)

अपने परदेशी सम्बन्धियों को और मान्य पुरुषों को जब कि वे आप के घर से जावें तो उन्हें कुछ दूर तक नगर के बाहर पहुँचाने जाना चाहिए और आवें तब आगे जाकर सम्मानपूर्वक अपने घर तक ले आना चाहिए ताकि उन्हें किसी प्रकार का कष्ट न होने पावे।

(५४)

ऋषि, मुनि और संन्यासी महात्माओं के चरणों को जल से धो कर उस जलको अपने मस्तक से लगाना और अपने सारे

घर मे छिडकना, उनकी प्रदक्षिणा करके आरती करना और परोपकार मे खर्च करने के लिए द्रव्यादि उनकी भेट करना, यह अत्यन्त पूजनीय महापुरुषो के स्वागत का प्राचीन भारतीय विधान है।

(५५)

अपने अध्यापको को अत्यन्त पूज्य दृष्टि से मानो। क्योंकि ज्ञान-दाता आपके लिए वही हुआ है, अतएव उसकी इज्जत करो। हिन्दू धर्मशास्त्र कहते है—

"एकाक्षरप्रदातारं योगुरुर्नैवमन्यते।
श्वानयोनिशतं गत्वा चाण्डालो सोपि जायते॥"

(५६)

लोगो को भोजनार्थ अपने यहाँ बुला कर उन्हे भोजन करने के लिए जमीन पर धूल मे मत बिठाओ, अच्छे आसनो पर आदर-पूर्वक बिठाओ। भोजन के स्थान को खुशबूदार वस्तुओ द्वारा सुगन्धमय कर दो।

(५७)

किसी के नामोच्चारण के पूर्व श्रीयुत, श्रीमान्, पंडितजी, सेठजी, महाशय, बाबू, मित्र, बन्धु आदि यथा योग्य शब्द लगाना चाहिए और नाम के अंत मे "जी" शब्द का प्रयोग करना चाहिए। नामोच्चारण करना भी अनुचित प्रतीत हो तो उनके पद, उपनाम आदि से भी पुकारा जा सकता है। जैसे चौबेजी, मिश्रजी, वर्माजी, गांधीजी, तिलकजी इत्यादि।

(५८)

यदि किसी से नाम पूछना हो तो "आपका इस्म मुबारिक?" "इस्म शरीफ?" "श्रीमान् का शुभ नाम?" आदि आलंकारिक वाक्यो मे पूछना चाहिए।

(५९)

यदि अपना नाम बताना हो तो नाम के पूर्व "इस शरीर का नाम" "आपके सेवक का नाम" इत्यादि वाक्य लगा कर नामोच्चारण करना चाहिए। और अपने नाम के साथ सम्मान सूचक शब्द जैसे "पण्डित जी" आदि नही लगाने चाहिए।

(६०)

जिन्हे आप पूज्य दृष्टि से देखते है उन्हें किसी प्रकार का बोझा ले कर मत चलने दो। उनका बोझ उनके इन्कार करते रहने पर भी आप उठा लो। इसी प्रकार यदि आपके किसी मित्र के पास बोझ हो और आप खाली हाथो हो तो उसे बॅटा लो।

(६१)

गृहस्थ को चाहिए कि सध्या समय अपने घर आये हुए मनुष्य का भले प्रकार सत्कार करे, और सोने बैठने तथा भोजन आदि का प्रबन्ध कर दे।

"अप्रणोद्योऽतिथि सायं, सूर्योढोगृहमेधिना।
काले प्राप्तस्त्व-कालेवा, नास्यानश्नन्गृहे वसेत्॥"

(६२)

आजकल लोग घर आये हुए के सत्कार प्रदर्शनार्थ उसे मादक पदार्थ जैसे चा, तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, कसूंभा, शराब आदि देते हैं। किन्तु यह आसुरी-सभ्यता अर्थात् असभ्यता है। पाश्चात्य संसर्ग से ही अथवा मूर्खता के कारण से ही ऐसी सत्कार प्रथायें प्रचलित हो गई है।

पढ़ना लिखना

(१)

लिखते हुए व्यक्ति की बिना आज्ञा प्राप्त किये, उसका लिखा हुआ पढ़ने की कोशिश हरगिज नहीं करनी चाहिए। बहुत से लोग इस आदत से बाज नहीं आते। ऐसे लोगों को बिलकुल जंगली कह देना अत्युक्ति न होगी।

(२)

यदि कोई लिख-पढ रहा हो, तो उसके पीछे सिर पर खड़े रहना या पढ़ना उचित नहीं है।

(३)

यदि दृष्टि मे किसी प्रकार का दोप नहीं है तो बिलकुल आँखों के पास ले जा कर पढ़ना लिखना ठीक नहीं।

(४)

कई लोग लिखते समय पेन्सिल की नोक को थूक लगा कर लिखते हैं—ऐसा करने से अक्षर गहिरे काले आते है; किन्तु यह आदत ठीक नहीं। साफ्ट (कोमल) पेन्सिल से बिना थूक के ही अच्छा लिखा जा सकता है। इसके अलावा पेन्सिल की दोनो चीपों को जोड़ने मे सरेस काम में लाया जाता है, जो अपवित्र पदार्थ है। साथ ही यह भी सन्देह किया जा सकता है कि उसे शायद किसी दूसरे ने भी मुँह में ली हो या लेवे।

(५)

पाठशाला मे कई घिनौने बालक अपनी स्लेट (पट्टी) को थूक से साफ करते हैं, यह आदत बहुत ही भद्दी है।

(६)

लिखते समय कलम और हाथ को स्याही से लथपथ मत होने दो। बल्कि ऐसी सावधानी से लिखो कि हाथ को जरा भी स्याही का दाग तक लगने न पावे।

(७)

कलम मे स्याही अधिक भर आने पर उसे इधर उधर छींट कर दीवार फर्श इत्यादि मत बिगाड़ो।

(८)

दावात मे से स्याही भरने के लिए कलम को उसमे जोर-जोर से मत पटको।

(९)

अपने कपड़ो पर स्याही की एक बूँद भी मत गिरने दो। और न लिखने के कागज पर ही छींटा पड़ने दो।

(१०)

बहुत से लोगो की आदत होती है कि कलम को साफ करने के लिए अपने सिर के बालो मे पोछ लेते हैं, यह ठीक नहीं है। स्याही मे एक प्रकार की बदबू हो जाया करती है, जिससे सिर में भी बदबू आने लगती है।

(११)

कई लोग लेखनी हाथ मे ले कर कुछ न कुछ लिखने लग

जाते हैं और व्यर्थ ही कागज खराब करते है। धीरे-धीरे यह मर्ज इतना बढ़ जाता है कि अच्छे से अच्छे कागज और पुस्तके वे खराब करने मे जरा भी नही हिचकिचाते, यह ठीक नही। इसी तरह कुछ लोग कैंची हाथ मे आते ही उससे कागजो को काटने लगते हैं। यह आदत भी बुरी है।

(१२)

अपनी खुद की पुस्तक पर अथवा किसी दूसरे की पुस्तक पर जो मन मे आवे सो न लिखो। क्योंकि पुस्तके लिखने के लिए नही, बल्कि पढ़ने के लिए है। देखा गया है कि प्रायः लोग साप्ताहिक पत्र पढ़ने के लिए माँग कर लाते हैं और उनपर कुछ न कुछ लिख देते हैं। माना कि माँग कर लाने वाले की दृष्टि मे उसका मूल्य न हो, परन्तु उसके मालिक की दृष्टि में वह उसे प्यारा था। इसलिए किसी दूसरे के कागज पर बिना उसकी आज्ञा के कुछ मत लिखो।

(१३)

यदि किसी को सुनाना हो तो, पढ़ते समय जोर से पढ़ना ठीक है, नही तो व्यर्थ ही बोलने से या होठ हिलाने से कोई फायदा नही।

(१४)

बिना आज्ञा किसी के पत्र-व्यवहार को पढ़ने या जानने की इच्छा करना बड़ी भारी गलती है। किसी दफ्तर मे जा कर वहाँ के कागज पत्रो को पढ़ने की चेष्टा करना भारी भूल है। जब कि आप का उनसे कोई सबंध ही नही तो पढ़ना भी क्यो ? माना

कि आप कर्मचारी के मित्र हैं, किन्तु उसके दफ्तर की कार्यवाही को जानने की चेष्टा का नाम मित्रता नही है।

(१५)

मासिक पत्रो और पुस्तको की गोलमोल घड़ी करके या तोड़ मरोड कर जेब मे रख कर ले जाने अथवा हाथ मे ले जाने का ढग बहुत ही बुरा है। ऐसा करने से पुस्तक-बदशक्ल बन जाती है। थोड़े ही दिनो मे मरे हुए पक्षी के पंखो की तरह उस किताब के सफे बिखर जाते हैं।

(१६)

पुस्तको पर मत बैठो, उन्हे पैर न छुआओ और उनके पृष्ठो को न मुड़ने दो। "प्रेस" जैसे स्थानो मे यदि इस नियम मे कुछ शिथिलता आ जावे तो कोई हानि नहीं।

(१७)

लिखते समय, यदि दूसरे के पढ़ने के लिए लिखते हो तो उसकी सुविधाओ का ध्यान रक्खो। अक्षर साफ साफ लिखो ताकि उसे पढ़ने मे कठिनता न हो। बहुत ही शीघ्रता से बुरे-बुरे अक्षर लिखने मे प्राय लोग अपना पांडित्य समझते है किन्तु यह भूल है। अक्षर साफ सुथरे और सुवाच्य होने चाहिए। पत्र व्यवहार के समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

(१८)

किसी दूसरे की पुस्तक को यदि मॉगकर पढ़ने के लिए लाये हो, तो उस पर अपना नाम या और कुछ यहॉ तक कि पुस्तक के मालिक का नाम भी अपने हाथ से उसकी आज्ञा के बिना मत

लिखो। स्मरण रखो कि वह मैली न हो जावे। पृष्ठो के कौने न मुडने पावे, कोई अनजान बालक किसी पृष्ठ को या चित्र को न फाड़ डाले। यदि आपको इन बातो की परवाह नही है तो आप दूसरे लोगो से पुस्तके मत माँगिये—नही तो वे इन्कार कर देंगे। या आपको कुछ खरी खोटी कह देगे तो आपको बुरा लगेगा।

(१९)

विद्यार्थियो! पाठशाला मे सिवाय पढने लिखने के बातचीत, खेलकूद, झगडा आदि दूसरा काम मत करो। यह ध्यान रखो कि विद्याभ्यास के समय विद्याभ्यास करो और खेलने के वक्त खेलो।

(२०)

पुस्तक यदि पढ़ने के लिए माँग कर लाये हो तो उसे शीघ्र ही लौटा दो। देने वाले के माँगने की राह मत देखो। यदि पढ़ने के लिए फ़ुरसत नही है, तो पुस्तको को व्यर्थ ही ला ला कर अपने घर में ढेर मत करो। अवकाश न हो तो विना पढ़े ही लौटा दो, फिर जब कभी फ़ुरसत हो तब माँग लाना। माँग कर लाई हुई पुस्तक को हड़प जाना बहुत ही कमीनापन है।

(२१)

यदि कोई मनुष्य लिख पढ रहा हो तो उसके पास बैठकर किसी पुस्तक को जोर-जोर से बोल कर नही पढ़ना चाहिए। मन ही मन पढ़ना उचित है।

(२२)

वाचनालय या पुस्तकालय मे जा कर पुस्तक अथवा समाचार पत्रो को जोर-जोर से कभी नहीं पढ़ना चाहिए।

(२३)

लिखते हुए या पढ़ते हुए व्यक्ति से बातें करना या और ऐसे काम करना जिनसे कि उसके कार्य मे विघ्न पड़े, अत्यंत वेहूदगी है।

(२४)

किसी के गुप्त कागज पत्र को उसके मालिक की आँख बचा कर चोरी छाने पढने का प्रयत्न करना मूर्खता है ।

(२५)

धर्मग्रंथो को पैर लगाना, पृथ्वी पर रखना, और उनके सफे लौटते वक्त थूक लगाना बिलकुल अनुचित है ।

स्त्रियों के साथ व्यवहार।

(१)

यदि स्त्रियाँ आस-पास हो और आपके कंठ मे उस समय कफ या खाँसी आ गई हो तो जैसे तैसे रोको, न रुके तो जा कर आड़ मे खाँसना ठीक है। अथवा इस ढंग से उस खाँसी या कफ को शमन करो कि उन स्त्रियो का ध्यान आपकी तरफ आकर्षित न हो।

(२)

यदि कही स्त्रियां बैठी हो तो वहाँ चुपचाप चले जाना ठीक नहीं है। ऐसा कोई शब्द करके आगे बढ़ो कि उन्हे तुम्हारा आना पहले से ही मालूम हो जावे।

(३)

स्त्रियो को देखकर अपनी दृष्टि किसी दूसरी तरफ कर लेना चाहिए। उनकी ओर टक-टकी से न देखो। यदि किसी से योगात् चार आँखे हो भी जावे तो तत्काल अपनी दृष्टि नीची कर लो।

(४)

स्त्रियों के साथ बातचीत करते समय अपनी दृष्टि नीची रखना चाहिये। यदि आवश्यकता हो तो उनकी ओर देख कर फिर नीची निगाह कर लो।

(५)

कन्याओ को बहिन या बेटी, युवतियों को बाई या बहिन तथा वृद्धा स्त्रियो को माजी या माता कहकर सम्बोधन करो।

(६)

जो स्त्री आपको देखकर लज्जा करे, उसके सामने ज्यादा-फिरना, विना कारण वातचीत करना या उसकी तरफ देखना उचित नहीं है।

(७)

जहाँ औरते हो वहाँ गाना वजाना, ताली पीटना, चुटकियाँ वजाना और सीटी देना असभ्यता है।

(८)

जहाँ प्राय: औरते रहती हो, उस जगह ठहरना, घूमना या वार वार जाना ठीक नही है।

(९)

रेल वगैर सवारियों मे वैठकर मार्ग के आसपास खड़ी हुई वहिनो और माताओ को पैरो के इशारो से या लज्जाजनक असभ्य वाते कहकर अपनी नीचता का परिचय न दो।

(१०)

जहाँ स्त्रियाँ हो, वहाँ विना किसी कारण-विशेष के लँगोट बाँधकर या केवल धोती पहिनकर नंगे वदन घूमना अनुचित है।

(११)

जहाँ पर स्त्रियां हो, वहाँ आपस मे दिल्लगी-मजाक भी नहीं करना चाहिए। यही वात स्त्रियो के लिए भी है। वे भी पुरुषो के सामने अपनी निर्लज्जता न दिखावे।

(१२)

भले ही कितना भी किसी पुरुष से प्रेम हो, किन्तु उसकी स्त्री के पास अकेले मे पवित्र भाव ले कर भी मत जाओ।

(१३)

स्नान करते समय यदि एकान्त न हो तो अपने गुप्त स्थानों को वस्त्र रहित करके निर्लज्जतापूर्वक साफ न करो और न वस्त्र सहित होने पर बारंबार किसी की ओर देखते हुए रगड रगड कर साफ करो। जहाँ स्त्रियाँ हो, वहाँ तो विशेष सावधानी रखो।

(१४)

पराई स्त्री को अपनी माता के समान समझो. पराये धन को धूल के बराबर समझो और प्राणी मात्र मे अपनी सी जान देखो-अर्थात किसी को कष्ट न पहुँचाओ।

(१५)

औरतों को चाहिए कि, वे बीडी तम्बाकू न खावे और न पिये। जो स्त्रियाँ मादक पदार्थों का सेवन करती है, वे बिलकुल असभ्य हो जाती हैं।

(१६)

औरतो मे लडाई झगड़ा—वाद-विवाद न करो और न उन पर हाथ उठाओ। उनकी इज्जत करो। क्योकि—

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।'

(१७)

स्त्री दूकानदार से पुरुष को सौदा नहीं खरीदना चाहिए। इससे लोग चालचलन पर सन्देह करने लगते है। स्त्रियो को भी उचित है कि दूकानदारी न करे। क्योकि दूकानदारी से स्त्रियों के शील और चरित्र को लाञ्छन आता है।

(१८)

अपनी भार्या को मत मारो, आप आरभ से ही उसके साथ

ऐसा बर्ताव करो जिससे यह नौबत ही न आवे। स्त्रियों पर हाथ उठाना मर्दों का काम नहीं है। अतएव स्त्रियों को कदापि नहीं मारना-पीटना चाहिए। क्योंकि—

"सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ॥"

(१९)

नग्न स्त्रियों को ताकना या उन्हे नग्न दशा में देखने की चेष्टा करना बड़ी भारी असभ्यता है। कहा भी है—

"नग्ना नेक्षेत च स्त्रियम्।"

(२०)

भिक्षुक स्त्रियों को बुरी तरह मत झिड़को, उन्हे आदरपूर्वक जो बन सके सहायता दो। यदि वे चाहे तो किसी विधवाश्रम, वनिताश्रम मे उन्हे पहुँचा दो। बूढी स्त्रियों को माता के समान समझ कर उन्हे अवश्य भिक्षा दे।

(२१)

विधवा स्त्रियों के साथ कठोर व्यवहार मत करो। उनके साथ अत्यन्त नम्रता से व्यवहार करो। जो लोग विधवाओ को अशुभ मानकर उन्हे रात दिन झिड़कते-डॉटते है और मारते-पीटते हैं अथवा अच्छा खाना-पहिनना नहीं देते वे मूर्ख है।

———>o<———

नारी-सभ्यता।

(१)

पुरुषो के साथ स्त्रियो को दूकानदारी नही करनी चाहिए। दुकान पर बैठाकर लेन-देन करना और भाषण करना अपने पवित्र आचरण को लोगो की दृष्टि मे गिराना है। जो स्त्रियाँ दूकानदारी करती है, लोगों की दृष्टि मे उनका चरित्र सन्देहपूर्ण हो जाता है।

(२)

स्त्रियो को चाहिए कि परपुरुषो के साथ व्यर्थ ही अनावश्यक बातचीत न करे। आवश्यकता पड़ने पर, नीची दृष्टि से, उनसे बोलना चाहिए और आवश्यकता से अधिक नही बोलना चाहिए।

(३)

स्त्रियो को उच्च स्वर से भाषण नहीं करना चाहिए। हमेशा मन्द स्वर से शान्तिपूर्वक बोलने का स्वभाव डालना चाहिए। यह आदत पीहर मे ही डाल लेनी चाहिए।

(४)

अपने घर के द्वार मे बैठ कर या खड़ी रह कर दूसरे घर मे मौजूदा स्त्रियो से बाते करना, या घर के मुख्य द्वार पर जो गली मे अथवा सडक के किनारे हो, बैठना स्त्रियो के लिए अनुचित है। कुछ स्त्रियाँ द्वार को बचाकर उसीके पास किवाड़ की ओट मे बैठती हैं। यह ठीक नही है।

(५)

सूर्यास्त के समय अथवा उसके बाद अपने घर के द्वार मे या द्वार के बाहर स्त्रियो को कदापि बैठना या खड़े नही रहना चाहिए । ऐसी स्त्रियॉं व्यभिचारिणी गिनी जाती है ।

(६)

अपने पति के भोजन करने के पहिले स्त्री को भोजन नहीं करना चाहिए। यदि पति न हो तो पहिले पुत्र अथवा घर के कमाऊ पुरुष को भोजन करावे । तत्पश्चात् स्वयं भोजन करे ।

"पति शुश्रु ते येन तेन स्वर्गमहीयते ।'

(७)

बहुतेरी बहिने अपने शरीर को सूई वगैर. से गोद कर उसमे लाल या नीला रङ्ग भर कर खूबसूरती के लिए आभरणो के चिह्न कर लेती हैं। यह ठीक नहीं है। यह प्रथा जगली जातियों मे विशेष रूप से पाई जाती है। ठोडी, गाल, कनपटी आदि पर तथा हाथो और पैरो पर गुदने गुदाना जंगलीपन का चिह्न है।

(८)

बहिनो और माताओं को चाहिए कि अनाप शनाप जेवरों को अपने शरीर पर न लादे। जेवर पहनना गंदापन है। स्त्रियो का जेवर उनका शील एवम् उत्तम चरित्र है।

(९)

कानो मे बहुत से छिद्र करके वालियाँ तथा और दूसरे आभूषण पहिनना बेहूदापन है। कई स्त्रियाँ कानो को इतना छिदाती हैं कि वे चलनी बन जाते है। कर्णाभूषणो के कारण स्त्रियो के कानो की खाल बुरी तरह लटकने लग जाती है। यह बहुत ही बुरा है।

(१०)

कई बहिने और माताएँ बहुत ही महीन वस्त्र पहिनती है, यह निर्लज्जता का सूचक है। घर के बाहर तो ऐसे वस्त्र कदापि नही पहिनने चाहिए। कुछ बहिने तो बारीक धोतियाँ बाँध कर मर्दों मे निर्लज्जतापूर्वक स्नान करती हैं। इनको समाज बड़ी घृणा की दृष्टि से देखता है।

(११)

स्त्रियों को चाहिए कि अपने पति के सोने के बाद सोवे और उठने के पहिले उठे। पति से पहले ही क्या बल्कि घर के सभी लोगो से पहिले उठ बैठा करे। मर्दों के उठ जाने के बाद तक शैय्या पर पडे रहना घोर लज्जा की बात है।

(१२)

अपने घर के लोगो से बनावटी शर्म दिखाना और बाहिरी लोगो से खुल्लमखुल्ला बात-चीत करना स्त्रियो के शील मे सन्देह पैदा करने वाली बात है। लज्जा सब के लिए समान होनी चाहिए।

(१३)

माताएँ और बहिने अपने नाते रिश्तेदारो से यदि लज्जा के कारण घूँघट निकालती हैं तो उन्हे धोबी, भंगी, चूडियो वाले, गोटे वाले और घर के नौकरो से भी लज्जापूर्वक बर्ताव करना चाहिए। ऐसा न करना और मानो लज्जा की मजाक करना एक समान है।

(१४)

औरतो को मार्ग मे चलते समय और खास कर के जहाँ

मनुष्य चलते फिरते हो, खूब चिल्ला चिल्ला कर आपस मे बात-चीत नही करनी चाहिए। ऐसी औरतें व्यभिचारिणी मानी जाती है।

(१५)

स्त्रियो को उचित है कि एकान्त मे पर-पुरुष से कदापि बात-चीत न करे। यदि एकान्त मे पर-पुरुष के साथ रहने का दैवात् मौका आ भी जावे तो वहाँ से हट जाना चाहिए। नीतिकारो ने तो तरुणी को एकान्त मे अपने भाई तथा पिता से भी मिलने के लिए मना किया है।

(१६)

स्त्रियो को खुले स्थानो मे, जहाँ लोगो की दृष्टि पडती हो कदापि नही सोना चाहिए। सदैव एकान्त मे अदब के साथ सोने का ध्यान रखना चाहिए।

(१७)

पनघट पर पानी भरने के लिए जाना और वहाँ पर जोर-जोर से अन्य स्त्रियो से बात-चीत करना, हँसना अथवा लडना झगड़ना अनुचित है।

(१८)

जगल मे लकड़ी कण्डे बीनने के लिए जाना और विशेषतः अकेली जाना ठीक नही।

(१९)

पुरुषो का समाज जहाँ अधिक हो वहाँ स्त्रियो का जाना ठीक नही है।

(२०)

बरात में स्त्रियों का जाना अत्यंत निर्लज्जता है। क्योंकि बरात में अनेक घरों के और अनेक विचारों वाले लोग जाते है। साथी ही ऐसे मौकों पर हँसी मजाक दि गी वगैर भी होती है, इसलिए स्त्रियों का उस समाज में होना बहुत ही बुरा है।

(२१)

जिन जातियों में स्त्रियों को भोजन कराने की प्रथा है जैसे विवाह-शादी या नुकता मौसर में, वहाँ स्त्रियों को जूठन नहीं छोड़ना चाहिए। देखा गया है कि ऐसे अवसरों पर पुरुषों क अपेक्षा स्त्रियाँ ही जूठन अधिक छोडती हैं। कुछेक नीच स्त्रियाँ मिठाई वगैर चुरा कर घर ले जाती हैं। क्या यह काम स्त्रियों के लिए योग्य कहा जा सकता है ?

(२२)

ऊँचे और अधिक घेरे वाले घाघरे (लहँगे) पहिनना ठीक नहीं। कुछ मूर्ख स्त्रियाँ पैरों में खूब गहने पहिनती है और उन्हें दिखाने के लिए घाघरे ऊँचे पहिनती हैं यह भद्दापन है।

(२३)

दाँतों में चोंपें लगवाना या छेद करा के दाँतों में सोने की कीलें लगवाना वेहूदापन है।

(२४)

आँगी की खूबसूरती अथवा जेवरों की झलक दिखाने के लिए महीन (वारीक) ओढ़नी ओढ़ना ओछापन है।

(२५)

सिर के बालो मे घी डाल कर उन्हें कई दिनो तक जूड़ बाँध कर रखना तथा आगे के बालो को गोंद से चिपका कर बाल बाँधने के श्रम से कई दिनो की छुट्टी पा लेना जंगलीपन है।

(२६)

कुछ स्त्रियाँ सामने के वालो मे गोटा और पन्नी के चमकदार फूल वगैर चिपकाती है। यह भी जगलीपन है।

(२७)

स्त्रियाँ सामने कपाल पर "बोर" नामक एक आभूषण धारण करती हैं। वर्त्तमान-युग मे देखा गया है कि उसके चारो ओर मोतियो को लगा-लगा कर वह इतना बड़ा बना लिया जाता है जिसकी चौडाई २॥ इंच से ३ तक देखी जाती है। दिखने मे वह ठीक बर्रों का छत्ता जैसा दूर से दिखाई पडता है। मारवाड़िनो मे या उनके ससर्ग मे रहने वाली स्त्रियो के सिरो मे प्रायः यह देखा जाता है। संभवत. स्त्रियाँ इसे ठीक समझती हो—या कुछ बेहूदे अशिक्षित पुरुषो की दृष्टि मे वह अच्छा भले ही हो परन्तु वास्तव मे यह अत्यंत भद्दापन है।

(२८)

घूँघट मे से एक आँख द्वारा अँगुलियो के आश्रय से कपड़ा हटा कर देखते चलना ठीक नही है। बाजार मे इस प्रकार शुक्राचार्य का पार्ट करना अनुचित है।

(२९)

रात दिन कॉच में मुँह देखना और पान चबाते रहना स्त्रियों के लिए दूषण है।

(३०)

ऐसे स्थानो में जहाँ पर लोगो की दृष्टि पडती हो, शृंगार करना, जैसे बाल सॅवारना, माँग भरना, काजल, आँजन, मेहदी लगाना, वस्त्र धारण करना इत्यादि बहुत ही बुरा है।

(३१)

हाथ पैरों पर मेहन्दी के चित्र बनाना ठीक नहीं है। शास्त्रो मे भी मेहदी को निषिद्ध वस्तु माना है। कार्तिक माहात्म्य मे एक कथा है कि गो लोक मे, गरुड और कामधेनु के युद्ध से जो गोरक्त भूमि पर गिरा उससे मेहदी उत्पन्न हुई है।

"रुधिरान्मेहदी जाता मोक्षार्थी दूरतस्त्यजेत्।"

हमें इसके सत्यासत्य से कोई प्रयोजन नहीं। तात्पर्य यही है कि स्त्रियों के लिए मेहदी लगाना असभ्यता है।

(३२)

पेट उघाड़े रहना या छाती उघाड़े फिरना स्त्रियो के लिए बेहयाई है।

(३३)

कलाइयो पर बहुत चूडियाँ पहिनना जंगलीपन है। गन्दगी का भी कारण है। बहुत सी जातियो मे स्त्रियों को कोहनी से

ऊपर भुजा पर भी चूड़ी पहिनाया जाता है। यह एक उपहासास्पद प्रथा अथवा शृंगार है। इसे कोई भी सभ्य-मनुष्य अच्छा नहीं कहेगा।

(३४)

पर पुरुषो से हाथ मिलाना भारतीय स्त्रियो के लिए महान् पातक है।

(३५)

बाजार मे अथवा मेलो-ठेलो मे गीत गाते हुए निकलना स्त्रियो के लिए लज्जा की बात है।

(३६)

मेलो मे तथा खेल-तमाशो मे जहाॅ कि स्त्रियो के लिए कोई खास तरीके पर प्रबन्ध न किया गया हो नहीं जाना चाहिए।

(३७)

किसी के यहाॅ मेहमानो के आनेपर स्त्रियाॅ उनके यहाॅ जॅवाई गवाने, देवर गवाने, इत्यादि गीत गवाने के लिये जाया करती है, यह अनुचित है। क्योकि गीतो मे ऐसी बातो ही का जिक्र रहता है जो उनके घर की स्त्रियो के मुॅह से ही सार्थक होते है। इसके अलावा जिन पुरुषो के लिए गीत गाये जाते है, वे भी स्त्रियो से हॅसी मजाक एवम् दिल्लगी करते है। ऐसे असभ्य समाज मे सम्मिलित होना ही पाप है।

(३८)

स्त्रियो को चाहिए कि गालियो के फोश गीत न गावे । गाली मुँह से निकालना भले आदमियो का काम नही है। स्त्रियो को इस असभ्यता मे दूर रहना चाहिए ।

(३९)

सभ्य स्त्रियो को चाहिए कि वे अपने देवर जँवाई और जँवाई के नाते रिश्तेदारो से भूल कर भी फोश मजाक न करे ।

(४०)

घर-गृहस्थी के कार्यो से छुट्टी पाने के बाद स्त्रियो को चाहिए कि अपना वक्त पठन-पाठन मे खर्च करे । अपने छोटे-छोटे बच्चो को, मोहल्ले की लड़कियो को और पड़ोसियो को कुछ उपदेश तथा शिक्षा दिया करे ।

(४१)

पराये घर बेकाम घूमते फिरना स्त्रियो के लिए अनुचित है ।

(४२)

शब्द करनेवाले जेवर, जैसे बिछुवे, चुटकी आदि नहीं पहिनने चाहिए ।

(४३)

बहुत सी कन्याएँ तथा माताएँ गोबर बटोरती फिरा करती हैं । यह बुरा है । इस समय को बचाकर यदि किसी दूसरे अच्छे काम मे खर्च किया जावे तो बहुत कुछ लाभ हो सकता है ।

(४४)

किसी को देखकर हँस देना, या अट्टहास करना अनुचित है।

(४५)

बहिनो ! फालतू वक्त को पढ़ने लिखने में गुजारो। और यदि पढ़ना लिखना न आता हो तो चर्खा चलाओ इससे घर भी आबाद होगा और अपने देश की सेवा भी होगी।

॥ इति ॥

सस्ता-साहित्य-मंडल, अजमेर.

स्थापना सन् १९२५ ई०, मूलधन ४५०००)

उद्देश्य—सस्ते से सस्ते मूल्य में ऐसे धार्मिक, नैतिक, समाज सुधार सम्बन्धी और राजनैतिक साहित्य को प्रकाशित करना जो देश को स्वराज्य के लिए तैय्यार बनाने में सहायक हो, नवयुवकों में नवजीवन का संचार करे, स्त्रीस्वातंत्र्य और अछूतोद्धार आन्दोलन को बल मिले।

संस्थापक—सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला (सभापति) सेठ जमनालालजी बजाज आदि सात सज्जन।

मंडल से—राष्ट्र-निर्माणमाला और राष्ट्र-जागृतिमाला ये दो मालाएँ प्रकाशित होती हैं। पहले इनका नाम सस्तीमाला और प्रकीर्णमाला था।

राष्ट्र निर्माणमाला (सस्तीमाला) में प्रौढ और सुशिक्षित लोगों के लिए गंभीर साहित्य की पुस्तकें निकलती हैं।

राष्ट्र-जागृतिमाला (प्रकीर्णमाला) में समाज सुधार, ग्राम संगठन, अछूतोद्धार और राजनैतिक जागृति उत्पन्न करनेवाली पुस्तकें निकलती हैं।

स्थाई ग्राहक होने के नियम

(१) ऊपर्युक्त प्रत्येक माला में वर्ष भर में कम से कम सोलह सौ पृष्ठों की पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। (२) प्रत्येक माला की पुस्तकों का मूल्य डाक व्यय सहित ४) वार्षिक है। अर्थात् दोनों मालाओं का ८) वार्षिक। (३) स्थाई ग्राहक बनने के लिए केवल एक बार ॥) प्रत्येक माला की प्रवेश फ़ीस ली जाती है। अर्थात् दोनों मालाओं का एक रुपिया। (४) किसी माला का स्थायी ग्राहक बन जाने पर उसी माला की पिछले वर्षों में प्रकाशित सभी या चुनी हुई पुस्तकों की एक एक प्रति ग्राहकों को लागत मूल्य पर मिल सकती है। (५) माला का वर्ष जनवरी मास से शुरू होता है। (६) जिस वर्ष से जो ग्राहक बनते हैं उस वर्ष की सभी पुस्तकें उन्हें लेनी होती हैं। यदि उस वर्ष की कुछ पुस्तकें उन्होंने पहले से ही ले रखी हों तो उनका नाम व मूल्य कार्य्यालय में लिख भेजना चाहिए। उस वर्ष की शेष पुस्तकों के लिए कितना रुपिया भेजना चाहिये, यह कार्य्यालय से सूचना मिल जायगी।

सस्ती-साहित्य-माला के प्रथम वर्ष की पुस्तकें

(१) दक्षिण अफ्रिका का सत्याग्रह—प्रथम भाग (महात्मा गांधी) पृष्ठ सं० २७२, मूल्य स्थायी ग्राहकों से ।≡) सर्वसाधारण से ॥।)

(२) शिवाजी की योग्यता—(ले० गोपाल दामोदर तामस्कर एम० ए० एल० टी०) पृष्ठ १३२ मूल्य ।=) ग्राहकों से ।)

(३) दिव्य जीवन—पुस्तक दिव्य विचारों की खान है। पृष्ठ-संख्या १३६, मूल्य ।=) ग्राहकों से ।) चौथी वार छपी है।

(४) भारत के स्त्री रत्न—(पाँच भाग) इस में वैदिक काल से लगाकर आज तक की प्रायः सब धर्मों की आदर्श, पतिव्रता, विदुषी और भक्त कोई ५०० स्त्रियों की जीवनी होगी। प्रथम भाग पृष्ठ ४१० मू० १) ग्राहकों से ॥।) दूसरा भाग दूसरे वर्ष में छपा है। पृष्ठ ३२० मू० ॥।-)

(५) व्यावहारिक सभ्यता—छोटे बड़े सब के उपयोगी व्यावहारिक शिक्षाएँ। पृष्ठ १२८, मूल्य ।)॥ ग्राहकों से ≡)॥

(६) आत्मोपदेश—पृष्ठ १०४, मू० ।) ग्राहकों से ≡)

(७) क्या करें? (टॉलसटॉय) महात्मा गांधी जी लिखते हैं—"इस पुस्तक ने मेरे मन पर बड़ी गहरी छाप डाली है। विश्व-प्रेम मनुष्य को कहाँ तक ले जा सकता है, यह मैं अधिकाधिक समझने लगा" प्रथम भाग पृष्ठ २३६ मू० ॥=) ग्राहकों से ।≡)

(८) कलवार की करतूत—(नाटक) (ले० टाल्सटाय) अर्थात् शराबखोरी के दुष्परिणाम, पृष्ठ ४० मू० -)॥। ग्राहकों से -)।

(९) जीवन साहित्य—(भू० ले० बाबू राजेन्द्रप्रसादजी) काका कालेलकर के धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक विषयों पर मौलिक और मननीय लेख—प्रथम भाग-पृष्ठ २१८ मू० ॥) ग्राहकों से ।=)

प्रथम वर्ष मे उपरोक्त नौ पुस्तकें १६६८ पृष्ठों की निकली है

सस्ती-साहित्य-माला के द्वितीय वर्ष की पुस्तकें

(१) तामिल वेद—[ले० अछूत संत ऋषि तिरुवल्लुवर] धर्म और नीति पर अमृतमय उपदेश—पृष्ठ २४८ मू० ॥=) ग्राहको से ।≡)॥

(२) स्त्री और पुरुष [म० टाल्सटाय] स्त्री और पुरुषों के पारस्परिक सम्बन्ध पर आदर्श विचार—पृष्ठ १५४ मू० ।=) ग्राहकों से ।)

(३) हाथ की कताई बुनाई [अनु० श्री रामदास गौड एम० ए०) पृष्ठ २६७ मू० ॥=) ग्राहकों से ।≡)॥ इस विषय पर आई हुई ६६ पुस्तकों में से इसको पसंद कर म० गांधीजी ने इसके लेखकों को १०००) दिया है ।

(४) हमारे जमाने की गुलामी (टाल्सटाय) पृष्ठ १०० मू० ।)

(५) चीन की आवाज़—पृष्ठ १३० मू० ।–) ग्राहकों से ≡)॥

(६) द० अफ्रिका का सत्याग्रह—(दूसरा भाग) ले० म० गांधी पृष्ठ २२८ मू०॥) ग्राहकों से ।=) प्रथम भाग पहले वर्ष में निकल चुका है ।

(७) भारत के स्त्रीरत्न (दूसरा भाग] पृष्ठ लगभग ३२० मू० ॥–) ग्राहकों से ॥≡) प्रथम भाग पहले वर्ष में निकल चुका है ।

(८) जीवन साहित्य [दूसरा भाग] पृष्ठ लगभग २०० मू० ॥) ग्राहकों से ।≡) इसका पहला भाग पहले वर्ष में निकल चुका है ।

दूसरे वर्ष में लगभग १६५० पृष्ठों की ये ८ पुस्तकें निकली है

सस्ती-प्रकीर्ण-माला के प्रथम वर्ष की पुस्तकें

(१) कर्मयोग—पृष्ठ १५२, मू० ।=) ग्राहकों से ।)
(२) सीताजी की अग्नि-परीक्षा—पृष्ठ १२४ मू० ।–) ग्राहकों से ≡)॥
(३) कन्या-शिक्षा—पृष्ठ सं० ९४, मू० केवल ।) स्थायी ग्राहकों से ≡)
(४) यथार्थ आदर्श जीवन—पृष्ठ २६४, मू० ॥–) ग्राहकों से ।=)॥
(५) स्वाधीनता के सिद्धान्त—पृष्ठ २०८ मू० ॥) ग्राहकों से ।–)॥
(६) तरंगित हृदय—(ले० पं० देवशर्म्मा विद्यालंकार) भू० ले० पं० पद्मसिंहजी शर्मा पृष्ठ १७६, मू० ।≡) ग्राहकों से ।–)

(७) गंगा गोविन्दसिंह (ले० चण्डीचरणसेन) ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारियों और उनके कारिन्दों की काली करतूतें और देश की विनाशोन्मुख स्वाधीनता को बचाने के लिए लडने वाली आत्माओं की वीर गाथाओं का उपन्यास के रूप में वर्णन—पृष्ठ २८० मू० ॥=) ग्राहकों से ।≡)॥

(८) स्वामीजी [श्रद्धानंदजी] का बलिदान और हमारा कर्तव्य [ले० पं० हरिभाऊ उपाध्याय] पृष्ठ १२८ मू० ।–) ग्राहकों से ।)

(९) यूरोप का सम्पूर्ण इतिहास [प्रथम भाग] यूरोप का इतिहास स्वाधीनता का तथा जागृत जातियों की प्रगति का इतिहास है। प्रत्येक भारत-वासी को यह ग्रन्थ रत्न पढ़ना चाहिये । पृष्ठ ३६६ मू० ॥=) ग्राहकों से ॥–)

प्रथम वर्ष में १७६२ पृष्ठों की ये ९ पुस्तकें निकली हैं

सस्ती-प्रकीर्ण-माला के द्वितिय वर्ष की पुस्तकें

(१) यूरोप का इतिहास [दूसरा भाग] पृष्ठ २२७ मू० ॥- ग्राहकों से ।=) (२) यूरोप का इतिहास [तीसरा भाग] पृष्ठ २४ मू० ॥-) ग्राहकों से ।=) इसका प्रथम भाग पहले वर्ष में निकल चुका है

(३) ब्रह्मचर्य-विज्ञान [ले० पं० जगन्नारायणदेव शर्म्मा, साहित्य शास्त्री] ब्रह्मचर्य विषय की सर्वोत्कृष्ट पुस्तक—भू० ले० पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे—पृष्ठ ३७४ मू० ।॥-) ग्राहकों से ॥-)॥

(४) गोरों का प्रभुत्व [बाबू रामचन्द्र वर्म्मा] संसार में गोरों के प्रभुत्व का अंतिम घंटा बज चुका। एशियाई जातियां किस तरह आगे बढ़ कर राजनैतिक प्रभुत्व प्राप्त कर रही हैं यही इस पुस्तक का मुख्य विषय है। पृष्ठ २७४ मू० ।॥=) ग्राहकों से ॥=)

(५) अनोखा—फ्रांस के सर्व श्रेष्ठ उपन्यासकार विक्टर ह्यू गो के "The Laughing man" का हिन्दी अनुवाद। अनुवादक हैं ठा० लक्ष्मणसिंह बी० ए० एल० एल० बी० पृष्ट ४७४ मू० १।=) ग्राहकों से १)

द्वितीय वर्ष में १५६० पृष्ठों की ये ५ पुस्तकें निकली है

राष्ट्र-निर्माण माला के कुछ ग्रंथों के नाम [तीसरा वर्ष]

(१) आत्म-कथा (प्रथम खंड) म० गांधी जी लिखित-अनु० प० हरिभाऊ उपाध्याय। पृष्ठ ४१६ स्थाई ग्राहकों से मूल्य केवल ॥=)
पुस्तक छप गई है।

(२) श्री राम चरित्र (३) श्रीकृष्ण चरित्र-इन दोनों पुस्तकों के लेखक हैं भारत के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य एम. ए. (४) समाज-विज्ञान [ले० श्री चन्द्रराज भण्डारी]

राष्ट्र-जागृतिमाला के कुछ ग्रन्थों के नाम [तीसरा वर्ष]

(१) सामाजिक कुरीतियां [टाल्सटाय] (२) भारत में व्यसन और व्यभिचार [ले० वैजनाथ महोदय बी. ए] (३) आश्रमहरिणी [वामन मल्हार जोशी] [४] टाल्सटाय के कुछ नाटक

विशेष हाल जानने के लिए बडा सूचीपत्र मंगाइये।

पता—सस्ता-साहित्य मण्डल, अजमेर